शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय दुर्ग

नैक बैंगलोर द्वारा मूल्यांकित "A+" ग्रेड की अधिमान्यता प्राप्त महाविद्यालय

कॉलेज समाचार

जुलाई-दिसम्बर 2024

स्वागत-अभिनंदन

डॉ. अजय कुमार सिंह ने महाविद्यालय के नये प्राचार्य पद का दायित्व ग्रहण किया

महाविद्यालय में सन् 2016 से प्राध्यापक के पद पर पदोन्नत रसायन शास्त्र विभाग के प्राध्यापक डॉ. अजय कुमार सिंह ने 6 नवम्बर 2024 को महाविद्यालय के प्राचार्य पद का कार्यभार ग्रहण किया। उल्लेखनीय है, कि शोध कार्य के क्षेत्र में डॉ. सिंह का उल्लेखनीय योगदान है। डॉ. सिंह ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से पीएचडी की उपाधि प्राप्त की है। आपके मार्गदर्शन में 20 शोधार्थियों ने पीएचडी की उपाधि प्राप्त की है। आपके 185 शोध पत्र अंतर्राष्ट्रीय उच्च स्तर के इम्पेक्ट फैक्टर वाले रिसर्च जर्नल्स में प्रकाशित है। इसके अलावा आपने 20 पुस्तकों में अध्याय का लेखन कार्य भी किया है। आपकी 03 पुस्तकें भी प्रकाशित है, जिनका प्रकाशन प्रतिष्ठित एल्सवेयर तथा टेलर एवं फ्रांसिस संस्थाओं द्वारा किया गया है। आपके शोध कार्यों के आधार पर साईटेशन इन्डेक्स (9000) एच-इन्डेक्स (34) तथा गूगल स्कॉलर में आपका विशिष्ट स्थान है। आप नेशनल एकेडमी ऑफ साईंसेस इंडिया ;(NASI), इलाहाबाद के मनोनीत सदस्य है। डॉ. सिंह फैलो ऑफ रॉयल सोसायटी लंदन के सदस्य है। आप युनिवर्सिटी ऑफ क्वाजुलू , नताल, डर्बन, दक्षिण अफ्रीका के मानद रिसर्च फेलो भी है। डॉ. सिंह 10 प्रतिष्ठित रिसर्च जर्नल्स के संपादक मंडल में शामिल है। आपने बांग्लादेश, थाईलैण्ड, चीन, नेपाल आदि देशों की यात्रा की है। आपने 04 रिसर्च प्रोजेक्ट्स भी पूर्ण किए है। डॉ. सिंह को भारत, बुल्गारिया वैज्ञानिक तथा तकनीकी सहयोग योजना के अंतर्गत भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा 01 शोध परियोजना भी प्राप्त हुई है। यह समूचे महाविद्यालय के लिए गर्व का विषय है। डॉ. अजय कुमार सिंह द्वारा प्राचार्य पद का कार्यभार ग्रहण करने पर महाविद्यालय परिवार ने हर्ष व्यक्त करते हुए उन्हें शुभकामनायें दी तथा आषा की कि डॉ. सिंह के नेतृत्व में महाविद्यालय प्रगति के अनेक सोपानों को पार करेगा।

बंगलुरू में आयोजित दक्षिण पूर्वी जोनल स्तरीय युवा उत्सव साईंस में कॉलेज, दुर्ग की टीम ने मारी बाजी, समूह लोक नृत्य में प्रथम स्थान प्राप्त किया

क्राइस्ट कालेज, बंगलुरू में 18 से 24 दिसम्बर तक ऑल इंडिया एसोसिएशन ऑफ सुनिवर्सिटीज द्वारा आयोजित दक्षिण पूर्वी जोनल स्तरीय युवा उत्सव के अंतर्गत जनजातीय समूह लोक नृत्य, प्रतियोगिता में हेमचंद यादव विश्वविद्यालय, दुर्ग की टीम ने प्रथम स्थान प्राप्त किया है। विश्वविद्यालय के इतिहास में यह पहला अवसर है, जिसमें समूह नृत्य प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है। यह जानकारी देते हुए साईंस कालेज, दुर्ग के सहायक प्राध्यापक डॉ. प्रशांत श्रीवास्तव ने बताया कि हेमचंद यादव विश्वविद्यालय, दुर्ग की इस टीम में पूरे प्रतिभागी शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, दुर्ग के नियमित छात्र-छात्राऐं है। अब यह टीम आगामी मार्च में नोयडा उत्तर प्रदेश में आयोजित होने वाले राष्ट्रीय युवा उत्सव में हेमचंद यादव विश्वविद्यालय, दुर्ग की टीम का प्रतिनिधित्व करेंगी। डॉ. श्रीवास्तव ने बताया कि इस विजेता टीम के मैनेजर के रूप् में शासकीय इंदिरा गांधी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, वैशाली नगर, भिलाई की सहायक प्राध्यापक डॉ. चांदनी मरकाम तथा साईंस कालेज, दुर्ग के सहायक प्राध्यापक डॉ. तरूण साहू शामिल थे। प्रतिभागियों में साईंस कालेज, दुर्ग के मोरध्वज, सारिका, क्षमा देवांगन, तारिणी विश्वकर्मी, तुकेश्वर साहू, तोषण लाल, द्रविण कुमार देशमुख, मीनेश यादव, रिंपा नायक तथा चंचल ठाकुर शामिल थे। विश्वविद्यालय की समूह नृत्य की विजेता टीम की सफलता पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए विश्वविद्यालय के कुलसचिव श्री भूपेन्द्र कुलदीप तथा साईंस कालेज, दुर्ग के प्राचार्य डॉ. अजय सिंह ने सभी प्रतिभागियों की कड़ी मेहनत एवं शानदार सफलता पर बधाई दी। विश्वविद्यालय की टीम ने जनजातीय लोक नृत्य के अंतर्गत आराध्य बूढ़ा देव की आराधना पर केन्द्रित लोक नृत्य प्रस्तुत किया । साईंस कालेज, दुर्ग की टीम को तैयार करने में विश्वविद्यालय की वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. के. पद्मावती, डॉ. ज्योति धारकर, डॉ. जी.एस. ठाकुर, डॉ. निगार अहमद, डॉ. तरलोचन कौर, डॉ. मीना मान का उल्लेखनीय योगदान रहा।

सम्पादक : डॉ. प्रशांत श्रीवास्तव

विद्यार्थी संकल्पित होकर अध्ययन करें - गजेन्द्र यादव

विद्यार्थी संकल्पित होकर अध्ययन करें तभी उन्हें सफलता प्राप्त होगी । लक्ष्यहीन अध्ययन से केवल निराशा हाथ लगती है । ये विचार दुर्ग शहर के विधायक गजेन्द्र यादव ने महाविद्यालय में आयोजित दीक्षारम्भ समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में व्यक्त किये। श्री यादव ने कहा कि नव प्रवेशित विद्यार्थी, जिन्हें महाविद्यालय से सम्बन्धित सम्पूर्ण जानकारी का अभाव होता है, उनके लिए उच्च शिक्षा विभाग छ.ग. शासन के निर्देशानुसार छ.ग. के प्रत्येक महाविद्यालय में आयोजित दीक्षारम्भ समारोह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है । इस समारोह के माध्यम से नवप्रवेशित विद्यार्थियों में आत्मविश्वास के साथ-साथ महाविद्यालय में उपलब्ध संसाधन, विभिन्न गतिविधियाँ एवं परीक्षा प्रणाली की सम्पूर्ण जानकारी एक साथ प्राप्त होती है । श्री यादव ने साइंस कॉलेज में बिताये गये अपने छात्र जीवन को याद करते हुए विद्यार्थियों से कहा कि महाविद्यालय में अध्ययन का समय छात्र जीवन का सबसे महत्त्वपूर्ण समय है । यदि आप अभी के 3-4 साल विद्यार्थी, जमकर मेहनत कर ले तो उसका समपूर्ण जीवन संवर जाता है । महाविद्यालय जीवनकाल में लापरवाही बरतने वाले विद्यार्थी जिन्दगी भर पछताते हैं । उन्होने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को छात्रहित में लाभकारी बताया ।

माँ सरस्वती को दीप प्रज्जवलन, सरस्वती वंदना तथा महाविद्यालय की एन.सी.सी. कैडेट्स द्वारा डॉ. अनुपमा कश्यप एवं डॉ. ज्योति धारकर के मार्गदर्शन में छत्तीसगढ़ के राज्यगीत के प्रस्तुतिकरण के साथ आरम्भ हुए दीक्षारम्भ समारोह में सर्वप्रथम सहायक प्राध्यापक डॉ. प्रशान्त श्रीवास्तव ने दीक्षारम्भ समारोह की महत्ता, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तथा महाविद्यालय में विद्यार्थियों हेतु उपलब्ध संसाधनों पर विस्तार से प्रकाश डाला । उन्होंने महाविद्यालय में लाइब्रेरी, प्रयोगशालाओं, खेलकूद, एन.एस.एस, एन.सी.सी. यूथ रेडक्रास, विभिन्न हाउस, युवा उत्सव, जिम, बैंडमिंटन हॉल, इग्नू तथा सुन्दर लाल शर्मा ओपन युनिवसिर्टी के अध्ययन केन्द्र, हॉस्टल बायोरिसोर्स परिसर आदि की भी जानकारी दी ।

अपने स्वागत भाषण में प्राचार्य डॉ. सिद्दीकी ने नवप्रवेशित विद्यार्थियों का स्वागत करते हुए कहा कि विद्यार्थी प्रारम्भ से ही लक्ष्य आधारित अध्ययन करें तो सफलता निश्चित है । कठिन परिश्रम, ईमानदारी एवं समर्पण को डॉ. सिद्दीकी ने सफलता का मूलमंत्र बताया। डॉ. सिद्दीकी ने विद्यार्थियों से आव्हान किया कि महाविद्यालय में उपलब्ध संसाधनों का भरपूर लाभ उठायें ।

दीक्षारम्भ समारोह में दो पालकों ने भी अपने विचार व्यक्त किये, इनमें श्री दिनेश मिश्रा तथा श्री सूरज कुंजाम शामिल थे । उच्चशिक्षा विभाग तथा यूजीसी के निर्देशानुसार महाविद्यालय के विभिन्न संकायों गणित, बायोलॉजी, कॉमर्स, कम्प्यूटर एप्लीकेशन, कला संकाय के सर्वोच्च अंक प्राप्त 10 विद्यार्थियों को एनईपी एम्बेसेडर मनोनीत किया गया । इन एम्बेसेडर मे भी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर अपने विचार प्रस्तुत किये । समारोह में उपस्थित प्रत्येक नवप्रवशित विद्यार्थियों का तिलक लगाकर स्वागत किया गया। इन एन.ई.पी. एम्बेसेडर को मुख्यअतिथि श्री गजेन्द्र यादव ने बैज पहनाकर सम्मानित किया तथा प्रत्येक विद्यार्थियों हेतू पौष्टिक स्वल्पाहार की भी व्यवस्था थीं । आभार प्रदर्शन वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. अनुपमा आस्थाना ने किया । अतिथियों का स्वागत करने वालों में प्राचार्य डॉ. एम.ए. सिद्धीकी, डॉ. एस.एन. झा, डॉ. ए.के. खान, रजिस्ट्रार श्री आशुतोष साव, मुख्य लिपिक श्री संजय यादव शामिल थे ।

दो चरणों में आयोजित इस दीक्षारम्भ समारोह में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 से जुड़े । विभिन्न बिन्दुओं जैसे विभिन्न कोर्सेस, जेनेरिक तथा वैल्यू एडेड कोर्स, क्रेडिट प्रणाली, आंतरिक मूल्यांकन परीक्षा, ग्रेड सिस्टम आदि की जानकारी महाविद्यालय के प्राध्यापकों डॉ. अजय सिंह, डॉ. कुसुमांजलि देशमुख, डॉ. प्रज्ञा कुलकर्णी, डॉ. सुनीता मैथ्यू, डॉ. राकेश तिवारी, डॉ. संजू सिन्हा ने दी । उन्होंने बताया कि अब विद्यार्थी को उत्तीर्ण होने हेतु 100 में से 40 अंक अर्जित करना होंगे । इन अंकों की गणना थ्योरी परीक्षा तथा आंतरिक मूल्यांकन को जोड़कर एक साथ की जायेगी । विद्यार्थियों तथा पालकों ने अनेक प्रश्न पूछकर अपनी जिज्ञासा को शांत किया ।

कॉलेज समाचार

जनजातीय अतीत को वास्तविक रूप से प्रस्तुत करना वर्तमान समय की प्रासंगिकता - कुलपति राठौर

हेमचंद यादव विश्वविद्यालय, दुर्ग द्वारा जनजातियों के गौरवशाली अतीत पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित

जनजातीय अतीत को वास्तविक रूप से प्रस्तुत करना वर्तमान समय की प्रासंगिकता है, यह हमारा दायित्व है, कि जनजातीय समाज के गौरवशाली ऐतिहासिक,सामाजिक,अध्यात्मिक इतिहास से वर्तमान युवा पीढ़ी को अवगत करायें, जिससे हमारी युवा पीढ़ी जनजातियों के खूबियों से परिचित हो सकें तथा पर्यावरण संरक्षण एवं राष्ट्र के विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सके। ये विचार दुर्ग के संभागायुक्त एवं हेमचंद यादव विश्वविद्यालय, दुर्ग के कुलपति श्री सत्य नारायण राठौर ने महाविद्यालय में व्यक्त किये। कार्यशाला को अत्यंत उपयोगी बताते हुए कुलपति श्री राठौर ने कहा कि इस प्रकार के आयोजन से नयी पीढ़ी को अतीत की वास्तविक जानकारी प्राप्त होती है।

छत्तीसगढ़ राज्य के राज्य गीत 'अरपा पैरी के धार' तथा विश्वविद्यालय के कुलगीत के साथ आरंभ हुये इस कार्यशाला में अतिथियों का स्वागत प्राचार्य डॉ. एम.ए. सिद्दीकी, डॉ. अनुपमा अस्थाना, डॉ. दिव्या कुमुदिनी मिंज, डॉ. ज्योत्सना गढ़पायले, डॉ. ज्योति धारकर विश्वविद्यालय के अधिकारीगण डॉ. दिनेश नामदेव, डॉ. सुशील गजभिये तथा सहायक कुलसचिव श्री हिमांशु शेखर मंडावी ने किया। कार्यक्रम के संचालक डॉ. प्रशांत श्रीवास्तव ने जनजातीय समाज के गौरवशाली अतीत पर प्रकाश डाला। अपने संबोधन में कार्यक्रम की प्रस्तावना प्रस्तुत करते हुए। वनवासी विकास समिति के प्रातांध्यक्ष डॉ. अनुराग जैन ने कहा कि विद्यालय एवं महाविद्यालय स्तर पर जनजातियों का वास्तविक इतिहास पढ़ाये जाने की आवश्यकता है। दुर्ग संभाग के उच्चशिक्षा के अपर संचालक डॉ. राजेश पाण्डेय ने कहा कि इस प्रकार के आयोजन से उच्च शिक्षा जगत में जहाँ एक ओर जनजातियों के प्रति सम्मान की भावना जागृत होगी वहीं हमारी युवा पीढ़ी जनजातियों के गौरवशाली इतिहास से अवगत हो सकेगी। अपने स्वागत भाषण में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. एम.ए. सिद्दीकी ने कार्यशाला को प्रासंगिक बताते हुए कहा कि ऐसे अनेक स्वतंत्रता संग्राम सेनानी है, जो जनजाति से जुड़े होने के बावजूद उनको उतनी प्रसिद्धी नही मिली जिसके वो हकदार थे।

तीन सत्रों में विभाजित इस कार्यशाला के प्रथम सत्र में धन्यवाद ज्ञापित करते हुए विश्वविद्यालय के कुलसचिव श्री भूपेन्द्र कुलदीप ने कहा कि इस प्रकार के आयोजन विश्वविद्यालय से संबद्ध प्रत्येक जिले में तथा प्रत्येक महाविद्यालय में किए जायेगें। कार्यशाला के मुख्य वक्ता अखिल भारतीय युवा कार्य प्रमुख वनवासी विकास समिति के श्री वैभव सुरंगे ने अपने डेढ़ घण्टा अवधि के महत्वपूर्ण जानकारी युक्त संबोधन में जनजातीय समाज की परम्परा, आध्यात्म, चिकित्सा पद्धति, सामाजिक सरोकार, विवाह प्रथा आदि से जुड़े विभिन्न बिंदुओं का विस्तार से विश्लेषण किया।

कार्यशाला में उपस्थित लगभग 300 से अधिक प्रतिभागियों ने श्री वैभव सुरंगे के उद्‌बोधन को अत्यंत लाभकारी बताया। श्री सुरंगे ने कहा कि हमारी जनजातियों की संख्या लगभग 8 प्रतिशत है, परंतु उन्होंने इतने अधिक उल्लेखनीय कार्य किए है, कि इस वर्ष पद्मश्री प्राप्त करने वाले कुल लोगों में से 20 प्रतिशत जनजाति समुदाय के हैं। यह इनकी दक्षता को प्रदर्शित करता है। श्री वैभव सुरंगे के अनुसार हम जनजाति समाज को उनके नजरिये के देखने के स्थान पर वर्तमान आधुनिक युग में अपने नजरिये से देखने का प्रयास करते हैं, यहीं हमारी सबसे बड़ी त्रुटि है।

हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला में आयोजित साहसिक शिविर हेतु महाविद्यालय के स्वयं सेवक मोरध्वज का चयन

दिनांक 12 से 21 सितम्बर 2024 को हिमाचल प्रदेश के के धर्मशाला में आयोजित होने वाली साहसिक शिविर के लिए हुआ है । यह शिविर भारत सरकार के युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय के निर्देशन में आयोजित की जा रही है, जिसमें हेमचंद यादव विश्वविद्यालय दुर्ग के राष्ट्रीय सेवा योजना के 20 स्वयंसेवकों ने हिस्सा लिया । महाविद्यालय के प्रभारी प्राचार्य डॉ. एस.एन. झा ने मोरध्वज को चयनित होने पर बधाई दी और साहसिक शिविर में उत्साहपूर्वक शामिल होने हेतु शुभकामनाएँ देकर सफल यात्रा की कामना की । साहसिक शिविर में विभिन्न प्रकार की शारीरिक और मानसिक क्षमताओं को बढ़ाने के लिए कई कौशल गतिविधियाँ सिखाई जाती हैं, जैसे - रॉक-क्लाइम्बिंग, ट्रेकिंग, नक्शा पढ़ने अर नेविगेशन कैम्पिंग, वाटर-स्पोर्टस, टीम-बिल्डंग एक्टीविटीज आदि । इन शिविरो का उद्देश्य प्रतिभागियों की शारीरिक सहनशक्ति, मानसिक दृढ़ता और आत्मविश्वास को बढ़ाना होता है । इस अवसर पर डॉ. अनुपमा अस्थाना, डॉ. अभिनेष सुराना, डॉ. एस.पी. सलूजा, डॉ. जी.एस. ठाकुर, डॉ. सतीश कुमार सेन, डॉ. प्रदीप जांगड़े आदि वरष्ठि प्राध्यापकों ने भी अपनी शुभकामनाएँ दी । साथ ही राष्ट्रीय सेवा योजना के जिला संगठक डॉ. जनेन्द्र दीवान एवं कार्यक्रम अधिकारी प्रो. तरुण कुमार साहू भी उपस्थित रहे । एनएसएस के स्वयं सेवक द्रविड़ कुमार, मिनेश कुमार ने भी अपनी सहभागिता दी ।

एन्टी रैगिंग सेल द्वारा ओरिएन्टेशन कार्यक्रम का आयोजन

नवप्रवेषित छात्रों हेतु ओरिएन्टेशन कार्य का आयोजन किया गया । जिसका उद्देश्य उन्हें रैगिंग व उससे सम्बन्धित कानून व दंड की जानकारी प्रदान करना था। जिससे वे इससे अपना बचाव कर सकें । इस संदर्भ में कमेटी की संयोजक डॉ. रजंना श्रीवास्तव ने छात्रों को रैगिंग क्या है इस बारे में जानकारी दी ।

रसायन शास्त्र विभाग के प्राध्यापक, समिति के सदस्य डॉ. अजय सिंह द्वारा पावर प्वॉइन्ट के जरिए यूजीसी के द्वारा दिए निर्देश व कानून की जानकारी छात्रों को प्रदान की गई। महाविद्यालय में यूजीसी के द्वारा रैगिंग में लिप्त पाए छात्रों हेतु कठोर प्रावधान दिए गए हैं ।

महाविद्यालय परिसर में रैगिंग न होने दे । महाविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग के प्राध्यापक डॉ. ए.के. खान ने छात्रों को विभिन्न उदाहरणों के द्वारा रैगिंग के दुष्परिणाम की जानकारी छात्रों को दी । इसके साथ ही छात्रों के बीच एक मिनट स्पीच प्रतियोगिताएं रखी गयी । जिसमें विद्यार्थियों ने उत्साह पूवर्क अपनी भागीदारी दी । कार्यक्रम का संचालन डॉ. संजू सिन्हा (प्राध्यापक) ने दिया । धन्यवाद ज्ञापन दिव्या मिंज (सहा. प्राध्यापक) द्वारा दिया गया ।

उच्चशिक्षा विभाग द्वारा मनोनीत मास्टर ट्रेनर ने दिया, विभिन्न महाविद्यालयों में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का प्रशिक्षण

उच्च शिक्षा विभाग छत्तीसगढ़ शासन द्वारा मनोनीत किए गए 5 मास्टर ट्रेनर दुर्ग जिले के लगभग 50 से अधिक महाविद्यालयों में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 से जुड़े विभिन्न बिन्दुओं पर महाविद्यालयों में भौतिक रूप से उपस्थित होकर प्रशिक्षण दे रहे हैं । यह जानकारी देते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. एम.ए. सिद्दीकी ने बताया कि यह प्रशिक्षण 1 जुलाई से 6 जुलाई के मध्य आयोजित किया जा रहा है । इसके अंतर्गत बी.एड तथा लॉ विषयों वाले महाविद्यालयों को छोड़कर प्रत्येक जिले में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार पाठ्यक्रम क्रेडिट सिस्टम, सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक परीक्षा प्रणाली की जानकारी प्रत्येक प्राध्यापक एवं कर्मचारियों को प्रदान की जा रही है ।

इसी सन्दर्भ में महाविद्यालय के साईंस कॉलेज दुर्ग, घनश्याम सिंह आर्य कन्या महाविद्यालय, दुर्ग तथा सेठ रतन चंद सुराना महाविद्यालय, दुर्ग के प्राध्यापकों हेतु राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 से सम्बन्धित प्रशिक्षण कार्यक्रम महाविद्यालय के राधाकृष्णन हॉल में आयोजित किया गया । इस कार्यक्रम में मास्टर ट्रेनर डॉ. अजय सिंह ने तीनों महाविद्यालयों के लगभग 150 से अधिक प्राध्यापकों एवं कर्मचारियों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 से जुड़े विभिन्न मुद्दों की विस्तार से जानकारी दी। कार्यक्रम में उपस्थित अनेक प्राध्यापकों ने प्रश्न पूछकर अपनी जिज्ञासा शांत की । कार्यक्रम के आरम्भ में डॉ. प्रशांत श्रीवास्तव ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की रूपरेखा प्रस्तुत की। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. एम.एम. सिद्धीकी ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को छात्रों के हित में बातते हुए कहा कि सभी प्राध्यापकों को इसके सम्बन्ध में सही एवं पूर्ण जानकारी आवश्यक है। महाविद्यालय की स्वशासी परीक्षा प्रकोष्ठ प्रभारी डॉ. जगजीत कौर सलूजा ने भी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रमुख बिन्दुओं पर प्रकाश डाला ।

महाविद्यालय की वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. अनुपमा अस्थाना ने बताया कि दुर्ग जिले के लिए उच्च शिक्षा विभाग ने जो मास्टर ट्रेनर प्रशिक्षण हेतु चयनित किये हैं, उनमें डॉ. अजय सिंह, डॉ. कुसुमांजलि देशमुख, साईंस कॉलेज, दुर्ग डॉ. अवधेश श्रीवास्तव, शासकीय महाविद्यालय, उतई, डॉ. संजय दास, शासकीय महाविद्यालय, वैशाली नगर, डॉ. तापस मुखर्जी, शासकीय महाविद्यालय, बोरी डॉ. अल्पना दुबे, शासकीय महाविद्यालय, भिलाई -3 शामिल है । अब तक लगभग 30 से अधिक महाविद्यालय के प्राध्यापकों को प्रशिक्षण दिया जा चुका है ।

महाविद्यालय में एनएसएस स्वयं सेवकों ने मनाया बुजुर्गों संग नया वर्ष

महाविद्यालय के एन.एस.एस. स्वयं सेवकों ने बुजुर्गों के साथ वृद्धाश्रम में उनके आशीर्वाद लेकर नया साल मनाया। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ .एम ए सिद्दीकी की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों ने वृद्ध आश्रम में बुजुर्गों को फल बा-ंटकर नया वर्ष मनाया ।

साइंस कॉलेज दुर्ग के छात्र इकाई के एन.एस.एस. कार्यक्रम अधिकारी प्रो. जनेंद्र दीवान के नेतृत्व में एन.एस.एस. स्वयंसेवकों ने नए वर्ष को बुजुर्गों के साथ मनाने का निर्णय लिया । जिसके अंतर्गत विद्यार्थियों ने बुजुर्गों के सानिध्य में समय बिताकर बहुत कुछ सीखा और ज्ञान अर्जन किया । उन्होंने उनकी समस्याएं सुनी उनके साथ उनके अनुभवों को जाना।

प्रो जनेंद्र कुमार दीवान ने बताया कि बहुत से बुजुर्ग बच्चों को अपने बीच पाकर बहुत प्रसन्न हुए। कॉलेज के वरिष्ठ एनएसएस स्वयं सेवक सतेक मिर्चन, लोकदीप मिर्चन, शत्रुहन, संदीप एवं मोहम्मद आदिल ने इस अवसर पर वृद्धाश्रम के प्रबंधक दीपक कुमार जी से मिलकर भी वृद्धों की समस्याओं को जाना तथा समझा।

मानसिक स्वास्थ्य एवं भावना प्रबंधन पर कार्यशाला

Understanding Mental Health and Emotional Intelligence विषय पर जिला प्रशासन, दुर्ग तथा अतिरिक्त संचालक, उच्च शिक्षा दुर्ग द्वारा एक संयुक्त कार्यशाला का आयोजन किया गया । इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य वर्तमान में युवाओं की मनः स्थिति को समझने तथा नवीन सत्र से लागू एनईपी से सम्बन्धित विद्यार्थियों के संशय का समाधान उनकी भावनाओं को समझ कर उससे उबरने हेतु प्राध्यापकों को प्रक्षिक्षित किया जाना था, साथ ही युवा पीढ़ी को विभिन्न प्रकार के अवसादों की स्थिति से उबराना तथा उन्हें कठिन परिस्थितियों में अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखकर उनसे उबरने हेतु शिक्षकों द्वारा प्रोत्साहित करना था ।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री अरविंद एक्का (आईएएस) एडीएम दुर्ग थे । इस कार्यशाला का आयोजन सुश्री रिचा प्रकाश चौधरी जिलाधीश, दुर्ग के व्यक्तिगत रूचि से संभव हुआ । कार्यशाला में श्रीमती यामिनी (पीएमयू) का सक्रिय योगदान रहा । उन्होंने युवाओं को इस क्षेत्र में कार्य करने हेतु जुड़ने का आह्वान किया । कार्यशाला का प्रारम्भ सरस्वती वंदना तथा इसके पश्चात् राज्य गीत से किया गया । तत्पश्चात् मंचस्थ अतिथियों को पुष्पगुच्छ एवं स्मृति चिन्ह प्रदान कर उनका अभिनन्दन किया गया । महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर एस.एन. झा ने कार्यशाला में सभी का स्वागत किया। उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि आज के तनावपूर्ण जीवन में जब दवा भी कारगर न हो तो इस कठिन समय में इस प्रकार के कार्यशाला का आयोजन निश्चित रूप से कारगर सिद्ध होगा।

डॉ. राजेश पाण्डेय, अतिरिक्त संचालक, क्षेत्रीय कार्यालय, उच्चशिक्षा दुर्ग, संभाग, दुर्ग ने अपने उद्बोधन में कहा कि वर्तमान में युवा पीढ़ी के पास असीम क्षमतायें हैं। उन्होंने कहा कि कौशल निर्माण से सु-सज्जित, वर्तमान सत्र से लागू इनईपी - 2020, 2047 के विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने में अत्यन्त सहायक होगा । एनईपी से संबंधित विद्यार्थियों की शंकाओं एवं अनिश्चिताओं को इस कार्यशाला के द्वारा दूर किया जा सकता है । इमोशनल मैनेजमेंट के विशिष्ट प्रशिक्षण के द्वारा हम विद्यार्थियों को उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु तैयार कर सकते हैं।

कार्यशाला के मुख्य अतिथि आयुक्त, दुर्ग, संभाग, श्री सत्य नारायण राठौर, (आईएएस) ने अपने उद्बोधन में बहुत ही सरल तरीके से बताया कि वास्तव में दिमाग और शरीर का सामंजस्य न होना ही तनाव है । इस तनाव को मेडिटेशन एवं योगा के द्वारा सरलता पूर्वक मैनेज किया जा सकता है । उन्होंने बताया कि जीवित और मृत के बीच केवल श्वास का अंतर होता है और इसी श्वास को नियंत्रण में रखकर हम अपनी शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य को नियंत्रित कर सकते हैं । उन्होंने डबल स्लिट थ्योरी के उदाहरण से बताया कि चीजों को देखने के हमारे नजरिये से चीजें हमें अलग-अलग दिखाई दे सकती हैं, इसीलिए हमें अपना नजरिया सकारात्मक रखना चाहिए । कार्यशाला के मुख्य वक्ता श्री नितिन श्रीवास्तव मनोवैज्ञानिक एवं मनोचिकित्सक ने बहुत ही रोचक तरीके से प्राध्यापकों को विभिन्न पीढ़ियों के विद्यार्थियों की समस्याओं एवं उन्हें होने वाले मानसिक तनावों के सम्बन्ध में जानकारी दी । साथ ही उन्होंने उपस्थित विद्यार्थियों से उनके मानसिक तनावों के कारणों की जानकारी ली । श्री श्रीवास्तव ने उपस्थित श्रोताओं से जीवन के विभिन्न अवस्थाओं की परिस्थितियों से संबंधित अनेक सरल प्रश्न पूछें तथा उनका अत्यन्त सरल तरीके से समाधान बताया । उन्होंने कहा कि मनुष्य में सभी प्रकार की भावनाएं प्राकृतिक रूप से उपस्थित होती है, और यह मानव जीवन के लिए अत्यन्त आवश्यक है । इन भावनाओं पर परिस्थिति के अनुसार नियंत्रण रखकर सामाजिक व्यवहार करना ही इमोशनल मैनेजमेंट है। सभी भावनाओं का सक्रिय एवं सकारात्मक एक्सप्रेशन ही एक अच्छे मानसिक स्वास्थ्य का परिचायक है ।

श्री श्रीवास्तव ने कहा कि हमें किसी भी प्रकार के अवसाद की स्थिति में आने पर या किसी अवसाद से ग्रसित व्यक्ति को इस परिस्थिति से उबारने के लिये सामाजिक अवहेलनाओं की चिन्ता न करते हुए किसी मनोचिकित्सक या मनोवैज्ञानिक की सेवाएं आवश्यक रूप से लिया जाना चाहिए । साथ ही उन्होंने यह बताया कि प्राध्यापक अपनी कक्षाओं में उपस्थिति विद्यार्थियों की समस्याओं को ध्यान में रखते हुए उनसे विनम्रता से पेश आयें। यदि कोई विद्यार्थियों की समस्याओं को ध्यान में रखते हुए उनसे विनम्रता से पेश आयें । यदि कोई विद्यार्थी किसी मानसिक परेशानी से ग्रसित है, तो उससे सहानुभूति पूर्वक व्यक्तिगत रूप से चर्चा करें तथा उसे उस परिस्थिति से निकालने में सहायता करें । उन्होंने कहा कि वर्तमान पीढ़ी अत्यन्त बुद्धिमान, सक्षम एवं कुशल पीढ़ी है । इनके मनोभावों को समझकर एवं उनका समुचित प्रबंधन करके हम एक कुशल युवा पीढ़ी का निर्माण कर सकते हैं। व्याख्यान के अंत में श्री श्रीवास्तव जी ने उपस्थित प्राध्यापकों एवं विद्यार्थियों के शंकाओं का समाधान किया तथा भविष्य में आवश्यकता होने पर सहयोग की बात कही ।

साहित्य अकादमी द्वारा हरिशंकर परसाई पर जन्मशती संगोष्ठी संपन्न

साहित्य अकादमी नई दिल्ली द्वारा महाविद्यालय और शासकीय दानवीर तुलाराम स्नातकोत्तर महाविद्यालय उतई के सहयोग से हरिशंकर परसाई जन्मशती संगोष्ठी का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय स्तर के इस आयोजन में बड़ी संख्या में छत्तीसगढ़ एवं छत्तीसगढ़ के बाहर से साहित्यकारों एवं साहित्य प्रेमियों ने सिरकत किया । इसि अवसर पर महाविद्यालय की पत्रिका कॉलेज समाचार के नये अंक का विमोचन भी किया गया ।

राधाकृष्णन सभागार साईंस कॉलेज दुर्ग में आयोजित इस आयोजन के उदघाटन सत्र में साहित्य अकादमी नई दिल्ली के उपसचिव देवेन्द्र कुमार देवेश ने साहित्य अकादमी की स्थापना कार्यप्रणाली आयोजन और उद्देश्य पर गंभीरता से प्रकाश डालते हुए अकादमी की विभिन्न रचनात्मक गतिविधियों यथा पुस्तक प्रकाशन, अनुवाद, पुस्तक प्रदर्शनी, कार्यशाला, पुरस्कार आदि के बारे में विस्तार से जानकारी दी । आरम्भिक वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादमी नई दिल्ली की सामान्य परिषद के सदस्य डॉ. सियाराम शर्मा ने कहा कि जब साहित्य की समस्त विधाएँ चूक जाती है तब व्यंग्य की आक्रामकता की जरूरत होती है । व्यंग्य में सम्पूर्ण समाज की कमजोरियों, विद्रुपताओं को उभाराने का गहरा प्रयास होता है । हरिशंकर परसाई ने व्यंग्य विधा को साहित्य की एक महत्वपूर्ण विधा के रूप में प्रतिष्ठित किया । उन्होंने आजादी के बाद भारतीय समाज की विसंगतियों पर गहरा प्रहार किया । परसाई के व्यंग्य में आम जनता के लिए प्रतिबद्धता है ।

बीज वक्तव्य देते हुए रांची से उपस्थित प्रख्यात हिन्दी आलोचक रविभूषण ने कहा कि परसाई की कृतियों से गुजरना है । वे स्वाधीन भारत के सजग प्रहरी थे ।एक लेखक मानवीय मूल्यों की स्थापना के लिये लिखता है । परसाई का लेखन भी बेहतर मनुष्य और न्यायपूर्ण समाज बनाने की दिशा में उद्यम है । अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए दुर्ग संभाग के अतिरिक्त संचालक, उच्च शिक्षा डॉ. राजेश पाण्डेय ने कहा कि परसाई ने पूरी व्यवस्था का अध्ययन किया था । उन्होंने अपनी रचनाओं में मनुष्य और समाज के दोहरे चरित्र को तल्खी से लिखा है । उद्घाटन सत्र का समाहार वक्तव्य देते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. एम.ए. सिद्दीकी ने कहा कि दुर्ग भिलाई में परसाई जी की रचना धर्मिता पर आयोजन सौभाग्य का विषय है ।आज के भ्रष्ट एवं दिशाहीन समय में परसाई जी का लेखन हमारे समय और समाज के लिये पथ प्रदर्शक है । उनकी भाषा आम आदमी की भाषा है । उनका विषय वस्तु हमारे बीच का होने के कारण जनमानस में काफी लोकप्रिय है। उद्घाटन सत्र का आभार ज्ञापन हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. अभिनेष सुराना ने किया ।

प्रथम सत्र में हरिशंकर परसाई : जनतंत्र का गद्यात्मक भाष्य पर अधिकारी वक्ताओं ने विचार किये । बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से उपस्थित युवा आलोचक डॉ. आशीष त्रिपाठी ने कहा कि परसाई ने जिस गद्य का इस्तेमाल किया वह रूप उसके पहले किसी ने नहीं किया था । परसाई को व्यंग्य विधा तक सीमित कर देना उनके कद को छोटा कर देना है । परसाई ने गद्य को जनतांत्रिक बनाया और गद्य की सीमाओं को तोड़ा । उन्होंने जनविरोधी गठजोड़ के रेशे-रेशे को अलग किया । वरिष्ठ व्यंग्यकार विनोद साव ने कहा कि परसाई का लेखन जड़ता को तोड़ने की कोशिश है । वे अपने समूचे लेखन में प्रतिपक्ष के नेता हैं । उनका लेखन जड़ता के बन्धन से मुक्ति का स्वर है । उन्हें राजनीतिक विद्रूपताओं के लेखन में महारथ हासिल थी । उन्होंने अपने लेखन में व्यवस्था का निर्भयता से चीरफाड़ किया है । दिल्ली विश्वविद्यालय से उपस्थित आलोचक एवं संपादक अशुतोष कुमार ने कहा कि - हमने व्यंग्य को यह महत्त्व नहीं दिया जिसका वो हकदार था। स्वतंत्र विधा के रूप में व्यग्यं एक शक्ति है, जिसे ठीक से अब तक नहीं पहचाना नहीं गया । उन्होंने समाज में व्यंग्य की उपेक्षा पर गहरी चिन्ता जाहिर करते हुए कहा कि परसाई का व्यंग्य मनोरंजन नहीं करता बल्कि वह परिवर्तनकामी है, वह बेचैन करता है । प्रथम सत्र की अध्यक्षता कर रहे दिल्ली से उपस्थित वरिष्ठ व्यंग्यकार प्रेम जनमेजय ने कहा कि परसाई मूलतः लोकतंत्रवादी थे। वे शिल्प की दृष्टि से भी लोकतंत्रवादी थे। लोगों ने परसाई जी को व्यंग्य विधा तक ही सीमित कर दिया, जबकि परसाई के कारण ही व्यंग्य असीम हुआ है । वे आमजन के लेखक हैं। समाज जब भी विकृत हुआ है लेखक

विरोध की भूमिका में उतरा है । परसाई जी अपने समय समाज की विसंगतियों के योद्धा थे।

द्वितीय सत्र में हरिशंकर परसाई की कथा दृष्टि और व्यंग्य बोध पर विचार विमर्श हुआ । प्रख्यात आलोचक डॉ. जयप्रकाश साव ने कहा कि - परसाई हिन्दी के संभवतः पहले ऐसे रचनाकार है, जिन्होंने अपने विचार स्तम्भों के माध्यम से व्यक्त किये। एक कथाकार के रूप में नई कहानी के दौर में परसाई जी उपेक्षित रहे । उनके कथा लेखन की ओर उनके समय में लोगों ने ध्यान नहीं दिया। व्यंग्य को पैदा करने के लिए विडम्बना का परसाई जी ने रचनात्मक उपयोग किया । परसाई के लेखन में मिथकों का जितने बड़े पैमाने पर प्रयोग हुआ है, उतना दूसरा दिखायी नहीं देता । जीवन और विचारधारा के प्रति उनका भरपूर समर्थन रहा । उन्होंने खुले तौर पर असहमति और प्रतिरोध को कहानी में स्थान दिया । अम्बिकापुर से उपस्थित वरिष्ठ कथाकार प्रभु नारायण वर्मा ने कहा कि परसाई हमारी व्यवस्था को बार बार नंगा करके उठाते है, उस पर कठोर आक्षेप करते हैं । परसाई जी के लेखन की विविधता और कहीं दिखायी नहीं देती ।

दुर्ग से उपस्थित वरिष्ठ कथाकार कैलाश बनवासी ने कहा परसाई का साहित्य आजादी के बाद देश की सत्ता व्यवस्था और समाज को समझने का दस्तावेज है । उनकी कहानी कला में उनकी मौलिकता परसाईपन स्पष्ट रूप से दिखता है । वे अपनी कहानियों में अलग तरह की दुनिया लेकर आते है । परसाई जी 360 डिग्री के बैट्समैन की तरह थे, उनकी कहानियों में विषय वस्तु 360 डिग्री में दिखायी देती है । द्वितीय सत्र की अध्यता कर रहे जबलपुर से उपस्थित वरिष्ठ साहित्यकार राजेन्द्र दानी कहा कि परसाई अपनी परम्परा का जिक्र अपनी कहानियों में करते हैं । उनका लेखन शताब्दियों तक प्रांसगिक रहेगा । वे अपनी रचनाओं में विचार और तथ्य ठोस जमीन से उठाकर रखते हैं । अंत में धन्यवाद ज्ञापन हिंदी विभागध्यक्ष डॉ. अभिनेष सुराना ने किया । कार्यक्रम का सफल संचालन डॉ. रीता गुप्ता एवं डॉ. जयप्रकाश साव ने किया ।

इस अवसर पर हिन्दी विभाग से डॉ. बलजीत कौर, डॉ. कृष्णा चटर्जी, डॉ. रजनीश उमरे, डॉ. सुबोध देवांगन, डॉ. ओम कुमारी देवांगन, डॉ. सरिता मिश्र, डॉ. शारदा सिंह, डॉ. लता गोस्वामी, सुषमा कौशिक सहित महाविद्यालय के और शा. दानवीर तुलाराम स्नातकोत्तर, महाविद्यालय उतई के अन्य विभागों के प्राध्यापकगण एवं कर्मचारीगण और वरिष्ठ साहित्यकार रवि श्रीवास्तव, डॉ. कोमल सिंह शार्वा, डॉ. ए.ए. खान, डॉ. ए.के. मिश्रा, डॉ. ए.के. श्रीवास्तव, राकेश मिंज, लोकेश्वर ठाकुर, डॉ. शुभा शर्मा, डॉ. विद्या पंचागम, डॉ. सीमा अग्रवाल, अर्चना पाण्डेय, प्रो. थान सिंह वर्मा, डॉ. शंकर निषाद, विद्या गुप्ता, राजकुमार सोनी, परमेश्वर वैष्णव, रजतकृष्ण, शैलेन्द्र साहू, पथिक तारक, भुआल सिंह ठाकुर, अम्बरीश त्रिपाठी, मांझी अनन्त, मुमताज सहित राजनांदगाँव रायपुर एवं धमतरी के साहित्य प्रेमी बड़ी संख्या में उपस्थित थे। शोधार्थी बेलमती, निर्मला, लक्ष्मीन, संग्राम सिंह निराला, अतुल, छोटेलाल, शिल्पी, मोरध्वज, तोरण लाल, जितेश्वरी साहू, पूर्णिमा, प्रियंका, यादव, नरोत्त्म, एमन साहू की आयोजन को सफल बनाने में सक्रिय भूमिका रहीं ।

तनाव प्रबंधन में ध्यान की भूमिका पर कार्यशाला

विश्व ध्यान दिवस के अवसर पर मानसिक स्वास्थ्य एवं तनाव प्रबंधन प्रकोष्ठ एवं मनोविज्ञान विभाग के संयुक्त तत्वावधान में तनाव प्रबंधन में ध्यान की भूमिका पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ. एस.डी. देशमुख, ट्रेनर माइंड कुल मेडिडेशन एवं विभागाध्यक्ष, भूगर्भशास्त्र थे। मुख्य वक्ता डॉ. एस.डी. देशमुख ने आतंरिक शांति एवं वैश्विक सद्भाव को ध्यान में रखते हुए ध्यान का प्रशिक्षण सत्र संपन्न कराया। ध्यान सत्र में तनाव प्रबंधन हेतु ध्यान की विशिष्ट तकनीक की चर्चा की। उन्होंने हृदय की गति तकनीक पर बल दिया। पैर के तलवे से लेकर मस्तिष्क को स्पन्दन करने वाली उर्जा का स्त्रोत धरती को बताया।

महाविद्यालय के प्राचार्य एवं कार्यक्रम के संरक्षक डॉ. अजय कुमार सिंह की प्रेरणा से कार्यशाला का आयोजन किया गया था। कार्यक्रम की शुरूआत मां सरस्वती के वंदन एवं अतिथि के स्वागत के साथ की गयी। कार्यक्रम का संचालन विभागाध्यक्ष डॉ. रचिता श्रीवास्तव द्वारा किया गया। धन्यवाद ज्ञापन विभाग की प्राध्यापक डॉ. प्रतिभा शर्मा ने किया। कार्यक्रम में छात्र-छात्राओं ने अपने अनुभव साझा किए। डॉ. सीमा पंजवानी एवं पुष्पलता निर्मलकर ने छात्र-छात्राओं से फीडबैक प्राप्त किया। प्राध्यापक डॉ. रश्मि गौर की उपस्थिति सराहनीय रही। कार्यक्रम में छात्र-छात्राओं ने बढ़-चढ़कर अपनी प्रतिभागी प्रस्तुत की।

हिन्दी दिवस का आयोजन

महाविद्यालय के हिंदी विभाग द्वारा दिनांक 14 सितम्बर 2024 को हिंदी दिवस के अवसर पर विद्यार्थियों के लिए निबंध, काव्य पाठ तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं ने बड़े उत्साह से प्रतियोगिता में भाग लिया ।

इस अवसर पर हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ.अभिनेष सुराना ने विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि वर्तमान में हिंदी केवल हमारे देश में ही सीमित नहीं बल्कि विश्व पटल पर प्रचारित व प्रसारित है ।अतः आज हिन्दी केवल अध्ययन-अध्यापन में ही उपयोगी नहीं अपितु रोजगारपरक भी हो गया है । अर्थशास्त्र विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. शिखा अग्रवाल ने कहा कि हमें समय के साथ अन्य भाषा की जानकारी रखना जरूरी है लेकिन अपनी भाषा को बचायें रखना भी नैतिक जिम्मेदारी है । निबन्ध में हुलसी, टेसु साहू, शालू चौहान, राजा पटेल, गौरव, अंजु श्री रंगे, कीर्तिका, नितेश कुमार सिन्हा, सत्यप्रकाश साहू आदि ने भाग लिया । तात्कालिक भाषण में कुमलेश साहू, मिथलेश कौर, शिल्पी गुप्ता, नितेश कुमार, लक्ष्मी प्रधान ने भाग लिया । काव्य पाठ में कुछ विद्यार्थियों ने स्वरचित काव्य का सस्वर पाठ किया ।

संस्कृति मंडावी, माधुरी रोशनी द्विवेदी, सुमित बंजारे, तंजेश्वरी निषाद, जया तिवारी, डाकेश कुमार ने काव्य पाठ किया। कार्यक्रम में वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. बलजीत कौर, डॉ. ओमकुमारी देवांगन, डॉ. शारदा सिंह, डॉ. लता गोस्वामी, डॉ. रमणी चन्द्रकार हिन्दी के शोधार्थी तथा स्नातक-स्नातकोत्तर के विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे । कार्यक्रम का संचालन डॉ. रजनीश उमरे ने किया ।

छ.ग. युवा महोत्सव 2025 में साईंस कालेज, दुर्ग द्वारा वर्किंग एवं स्टेटिक मॉडल का प्रदर्शन

छ.ग. राज्य शासन के खेल एवं युवा कल्याण द्वारा 12-14 जनवरी 2025 को तीन दिवसीय छ.ग. युवा महोत्सव का आयोजन साईंस कॉलेज ग्राउंड, रायपुर में किया गया था, जिसमें महाविद्यालय के रसायन, भौतिकी एवं माइक्रोबायलॉजी विभाग द्वारा वर्किंग एवं स्टेटिक मॉडल का प्रदर्शन एवं महाविद्यालय में निर्मित बायो उर्वरक माइक्रोराइजा का प्रदर्शन एवं विक्रय किया गया। रसायन विभाग द्वारा गोमूत्र के उपयोग द्वारा विषाक्त रंजकों युक्त जल के शुद्धिकरण एवं उपयोग हेतु जल में परिवर्तन कर जल संरक्षण पर मॉडल प्रस्तुत किया गया। भौतिक शास्त्र विभाग द्वारा स्मार्ट जीवन हेतु आईओटी आधारित गृह उपयोगी स्वचलित तंत्र का मॉडल प्रस्तुत किया गया, साथ ही सौर ऊर्जा से चलने वाले कीट ट्रैपर एवं आल्ट्रा सोनिक स्पर्श रहित प्रकाश नियंत्रण दर्शाने वाला मॉडल भी प्रस्तुत किया गया।

माइकोबॉयोलाजी विभाग द्वारा पैदावार बढ़ाने के लिये उपयोगी तत्व के अवषोशण में वृद्धि करने वाले जैव उर्वरकों का प्रदर्शन एवं विक्रय का स्टॉल लगाया गया एवं दर्शकों को इसकी विस्तृत जानकारी दी गई। साथ ही तेल अपषिष्टों के उपचार में सूक्ष्मजीवों की भूमिका से संबंधित मॉडल प्रदर्शित किया। उच्चशिक्षा विभाग के अंतर्गत लगाये गये स्टॉल में महाविद्यालय के एमएससी द्वितीय एवं चतुर्थ सेमेस्टर के विद्यार्थियों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। राज्योत्सव के तीनों दिनों में विद्यार्थियों ने हर वर्ग के दर्शकों को अपने स्वनिर्मितजैव उर्वरकों की जानकारी दी। युवा महोत्सव के अंतिम दिन छ.ग. राज्य के राज्यपाल श्री रमेन डेका ने स्टॉल का निरीक्षण किया एवं विद्याथिर्यों का उत्साहवर्धन किया। राज्योत्सव में कुल 23 छात्रों एवं 6 सहायक प्राध्यापकों ने सहयोग प्रदान किया। महाविद्यालय द्वारा युवा महोत्सव में विद्यर्थियों का प्रतिनिधित्व प्राचार्य द्वारा डॉ. अजय कुमार सिंह एवं नोडल अधिकारी डॉ. प्रज्ञा कुलकर्णी के द्वारा संपन्न किया गया।

पुण्य -श्लोक लोकमाता अहिल्या बाई होलकर राष्ट्रनिर्माण जनसेवा सुशासन और मातृ शक्ति का सर्वोत्ताम उदाहरण

- प्रोफेसर टोपलाल वर्मा

महाविद्यालय में पुण्य -श्लोक लोकमाता अहिल्या बाई होलकर की 300 वीं शताब्दी मनाई गई। इस कार्यक्रम के आयोजक एवं महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. एम. ए. सिद्दकी द्वारा स्वागत भाषण दिया गया । विषय प्रवर्तक के रूप आमंत्रित डॉ. एन. पी. दीक्षित, पूर्व कुलपति हेमचंद यादव विश्वविद्यालय, मुख्य वक्ता प्रो. टोपलाल वर्मा एवं संयोजक डॉ राजेश पाण्डेय, एवं क्षेत्रीय अपर संचालक उच्च शिक्षा छ. ग. शासन, मंच पर आसीन थे। इस अवसर पर डॉ राजेश पाण्डेय ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए अहिल्या बाई होलकर के योगदान एवं उनके त्यागपूर्ण जीवन से सीख लेने की प्रेरणा दी। तदुपरांत डॉ. एन. पी. दीक्षित ने कार्यक्रम की प्रस्तावना रखते हुए रानी अहिल्या बाई का संक्षिप्त जीवन परिचय प्रस्तुत किया और मल्हार राव होलकर की भी प्रसंशा की और बताया कि कैसे उन्होंने रानी अहिल्याबाई को अपनी पुत्रवधू होते हुए भी पुत्री की तरह उनके साथ स्नेहपूर्ण व्यवहार किया और सुशासन एवं नारी सशक्तिकरण हेतु स्वस्थ वातावरण तैयार किया। कार्यक्रम की अगली कड़ी में मुख्य वक्ता प्रो. टोपलाल वर्मा ने रानी अहिल्याबाई की जीवन गाथा का विस्तृत विवरण दिया और बताया की उनके शासनकाल में मालवा का क्षेत्र कितना समृद्ध था, लोग कितने खुश थे, अर्थव्यवस्था कितनी उन्नत थी, समाज में भेदभाव की भावना कम हो रही थी, उनका शासन न्यायपूर्ण था और उनकी नीति किसान हितैशी थी। उनके व्यक्तित्व की प्रसंशा करते हुए प्रो. वर्मा ने बताया की उनका जीवन संयमित था, आत्म महिमा - मंडन के वो विरुद्ध थीं। सती प्रथा समाप्ति हेतु उन्होंने अनेक कदम उठाए। अपनी विपरीत परिस्थितियों में उन्होंने राजपाठ का संचालन किया । अहिल्या बाई का सबसे महत्वपूर्ण योगदान धार्मिक और सामाजिक क्षेत्रों में भी देखा जाता है। उन्होंने वाराणसी के काशी विश्वनाथ   मंदिर सहित कई प्रमुख धार्मिक स्थलों का पुनर्निर्माण किया। वे धार्मिक सहिष्णुता और समाज सुधार की समर्थक थीं, और उन्होंने अनेकों मंदिरों, धर्मशालाओं, कुओं और सड़कों का निर्माण करवाया। उनके ये सभी कार्य आज उनके महत्व को रेखांकित करते हैं। कार्यक्रम के दौरान पर डॉ त्रिपाठी, पूर्व प्राचार्य, , डॉ शिखा अग्रवाल, डॉ कमर तलत ,डॉ अश्विनी महाजन आदि वरिष्ठ प्राध्यापक मंचासीन थे। कार्यक्रम का संचालन राजनीति विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ शकील हुसैन ने किया एवं धन्यवाद ज्ञापन अर्थशास्त्र विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ शिखा अग्रवाल ने दिया। इस कार्यक्रम में महाविद्यालय के वरिष्ठ -प्राध्यापक डॉ .ए. के खान, डॉ. ए. के कश्यप, डॉ अभिनेष सु-राना, डॉ सलूजा आदि उपस्थित थे।

वाणिज्य एवं प्रबंधन विभाग द्वारा नेट सेट एवं जेआरएफ परीक्षा के लिए विशेष कक्षाओं का आयोजन

महाविद्यालय के वाणिज्य एवं प्रबंधन विभाग द्वारा नेट सेट एवं जेआरएफ परीक्षा के लिए विशेष कक्षाओ का आयोजन दिनांक 16 दिसंबर 2024 से 3 जनवरी 2025 तक किया गया। जिसका मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को नेट सेट की परीक्षाओं के लिए मार्गदर्शन प्रदान करना है ।इसके प्रथम दिवस पर विभागाध्यक्ष डॉ. एस.एन झा ने विद्यार्थियों को इन परीक्षाओं से संबंधित जानकारी एवं इन परीक्षाओ की उपयोगिता बताते हुए विद्यार्थियों को इसके लिए सतत् प्रयास करने को कहा । महाविद्यालय के वाणिज्य के 30 से अधिक विद्यार्थियों ने कक्षा में अपनी उपस्थिति दी । वक्ता डॉ कुंदन जांगड़े के द्वारा इन परीक्षाओं के पाठ्यक्रम, परीक्षा पैटर्न एवं अन्य संबंधित जानकारी प्रदान की गई।

प्राणीशास्त्र विभाग द्वारा विशाखापट्नम का शैक्षणिक भ्रमण

महाविद्यालय के प्राणीशास्त्र विभाग के द्वारा विशाखापट्नम का शैक्षणिक भ्रमण 1 से 5 मार्च तक किया गया। इस शैक्षणिक भ्रमण में विद्यार्थियों ने बोर्रा गुफा, अरकू वैली, फिश एक्वेरियम सेंटर, फिशिंग डॉक, सबमेरिन, रामानुजन स्टूडियो तथा ट्राइबल यूलियन का भ्रमण किया एवं उनसे संबंधित जानकारियां प्राप्त की। विद्यार्थियों ने फिश एक्वेरियम सेंटर में समुद्री मछलियों के प्रकारों का अध्ययन किया। उन्होंने फिश डॉक पर समुद्री मछलियों की हार्वेस्टिंग एवं प्रोसेसिस से संबंधित विधियां सीखी। विद्यार्थियों ने समुद्री मछलियों का कलेक्शन एवं अध्ययन भी किया।

इस भ्रमण कार्यक्रम विभाग की डॉ. संजू सिन्हा, डॉ. अलका मिश्रा एवं गोपाल राम के निर्देशन में 30 विद्यार्थियों ने भाग लिया।

प्राणीशास्त्र विभाग के द्वारा महाविद्यालय के विद्यार्थियों हेतु नेट/सेट परीक्षा की तैयारियों हेतु निशुल्क कोचिंग

महाविद्यालय के प्राणीशात्र विभाग के द्वारा महाविद्यालय के विद्यार्थियों हेतु नेट/सेट परीक्षा की तैयारियों के लिए 11 जनवरी 2024 से 30 जनवरी 2024 तक 20 दिनों की निःशुल्क कोचिंग कक्षाऐं आयोजित की गयी। इस कोचिंग में विभिन्न संस्थानाओं के नेट/सेट उत्तीर्ण सहायक प्राध्यापकों एवं विषय विषेषज्ञों ने विद्यार्थियों को विषय से संबंधित कक्षाऐं ली साथ ही उन्होंने विद्यार्थियों को वस्तुनिष्ठ प्रश्न समय पर हल करने एवं परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने के टिप्स दियें। इस कोचिंग में वसीम अकरम ने प्रीति चन्द्राकर, चन्द्रकला, चिरंजीव पाण्डेय, गोपाल राम एवं ज्योति देवांगन ने कक्षाऐं ली। कार्यक्रम में 100 से अधिक विद्यार्थियों ने निःशुल्क कोचिंग का लाभ लिया।

महाविद्यालय में राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस मनाया गया

हमारे भारत ने चंद्रयान-3 की सफल लैंडिंग कर इतिहास रच दिया। इस शुभ क्षण का जश्न मनाने के लिए भारत सरकार द्वारा राष्ट्र को बधाई के लिए हर साल 23 अगस्त को राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस मनाने की घोषणा की।

इसी उपलक्ष्य में सरकार द्वारा राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस मनाया जाता है। महाविद्यालय में 23 अगस्त 2024 को गणित, भौतिक विज्ञान एवं रसायन विज्ञान विभाग के विद्यार्थी उत्साहपूर्वक कार्यक्रम का आयोजन किया हैं। कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. अनुपमा अस्थाना, डॉ. जगजीत कौर सलूजा एवं डॉ. राकेश तिवारी थे। डॉ. सीतेश्वरी चन्द्राकर एवं डॉ. प्रेरणा कठाने आयोजन सचिव थे।

महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. एम.ए. सिद्दीकी ने हम सभी को राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस के महत्व के बारे में बताया और सभी छात्रों को इस तरह के अद्भुत कार्यक्रम आयोजित करने और छात्रों को अनुसंधान क्षेत्र में अपना करियर बनाने के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर रंगोली प्रतियोगिता, निबंध लेखन, पीपीटी प्रेजेंटेशन प्रतियोगिता जैसी कई प्रतियोगिताएं आयोजित की गयी। विभिन्न विभागों के विद्यार्थियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

रंगोली बनाओ प्रतियोगिता के परिणाम डॉ. मौसमी डे, डॉ. श्वेता पाण्डेय एवं डॉ. विजय लक्ष्मी नायडू द्वारा घोषित किये गये। प्रथम स्थान में कुसुम डड़सेना एम.एससी. प्रथम सेमेस्टर (भौतिकी), द्वितीय स्थान में अंशिका ताम्रकार, एम.एससी. माइक्रोबायलॉजी ने प्राप्त किया। तृतीय स्थान में जया चंद्रोल रसायन शास्त्र ने हासिल किया।

निबंध लेखन प्रतियोगिता का परिणाम डॉ. प्रशांत श्रीवास्तव द्वारा घोषित किया गया। गीतांजलि साहू एम.एससी. प्रथम सेमेस्टर (माइक्रोबायोलॉजी) ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, गुंजन साहू एम.एससी. प्रथम सेमेस्टर (भौतिकी) ने दूसरा स्थान और एम.एससी. भौतिकी की नम्रता ने तीसरा स्थान प्राप्त किया।

पीपीटी प्रेजेंटेशन का परिणाम डॉ. प्रेरणा कठाने द्वारा घोषित किया गया। एकता पठानिया एम.एससी. प्रथम सेमेस्टर (माइक्रोबायोलॉजी) ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। द्वितीय स्थान में भूमिका देवांगन एम.एससी. रसायन विज्ञान ने प्राप्त किया। तीसरा स्थान अंशू सिन्हा एम.एससी. गणित ने प्राप्त किया। इसके निर्णायक डॉ. दिव्या मिंज, डॉ. लतिका ताम्रकार एवं डॉ. रेखा गुप्ता थे।

क्विज प्रतियोगिता का परिणाम डॉ. राकेश तिवारी द्वारा घोषित किया गया, जिसमें हरिओम मरावी प्रथम, अनुराग देशमुख, धवेन्द्र, लक्ष्मी नारायण द्वितीय एवं किरण वासनिक तृतीय स्थान प्राप्त किया। विजेताओं को पुरस्कार देकर बधाई दी गई एवं बाकी प्रतिभागियों को भी सांत्वना पुरस्कार दिये गये। अंत में ऐसे आयोजनों में अधिक भाग लेने के लिए शिक्षक द्वारा छात्र-छात्राओं को प्रोत्साहित कियें एवं सभी को आशीर्वाद दिए।

महाविद्यालय में वनस्पति शास्त्र परिषद का उद्‌घाटन

महाविद्यालय में वनस्पति शास्त्र परिषद का उद्‌घाटन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. एम.ए. सिद्दीकी तथा विशेष आमंत्रित वक्ता के रूप में प्रोफेसर स्वर्णलता सराफ, फार्मेसी विभाग, पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर छ.ग. उपस्थित रही।

कार्यक्रम का शुभांरभ माता सरस्वती को पुष्प अर्पित कर एवं दीप प्रज्जवलित कर किया गया। तत्पश्चात् विभाग के छात्राओं द्वारा स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया। महाविद्यालय के सहायक प्राध्यापक डॉ. जी.एस. ठाकुर, डॉ. सतीष कुमार सेन, डॉ. श्रीराम कुंजाम द्वारा प्राचार्य, विभागाध्यक्ष एवं विशेष आमंत्रित वक्ता का स्वागत पुष्प गुच्छ प्रदान कर किया गया। कार्यक्रम के उद्‌घाटन समारोह में प्राचार्य डॉ. एम.ए. सिद्दीकी ने कहा कि वनस्पतियों के विभिन्न प्रजातियों को संरक्षित करने की आवश्यकता पर बल दिया साथ ही उन्होंने कहा कि विभिन्न प्रजातियों के जर्म प्लाज्म को संरक्षित करने को कहा एवं उन पर शोध कार्य करने की आवश्यकता पर जोर दिया।

वनस्पति शास्त्र की विभागाध्यक्ष डॉ. रंजना श्रीवास्तव ने अपने स्वागत भाषण में छात्र-छात्राओं को वनस्पति शास्त्र परिषद के माध्यम से वर्षभर अपनी कार्यप्रणाली को निर्धारित करने को कहा साथ ही आसपास के जैव विविधता के बारे में जानकारी संकलित करने हेतु प्रेरित किया। इसके पश्चात् डॉ. जी.एस. ठाकुर ने छात्र-छात्राओं को महाविद्यालय के सबसे प्राचीन विभाग वनस्पति शास्त्र विभाग के बारे में पूर्व से आज तक किए गए कार्यों के बारे में अवगत कराया। इसके पश्चात् वनस्पति शास्त्र परिषद के सचिव डॉ. सतीश कुमार सेन द्वारा परिषद के उद्देश्य एवं कार्यों की जानकारी प्रदान की गयी, जिसमें उन्होंने पर्यावरण को संरक्षित करने हेतु कहा।

विशेष आमंत्रित वक्ता के रूप में उपस्थित डॉ. स्वर्णलता सराफ ने एम.एससी प्रथम एवं तृतीय सेमेस्टर के सभी छात्र-छात्राओं एवं सभी विभागीय प्राध्यापकों को वनस्पति शास्त्र के परिषद के उद्देश्यों को पूर्ण करने हेतु शपथ दिलायी। इसके बाद उन्होंने जड़ से उपचार तथ्य विषय के बारे में वनस्पति शास्त्र के छात्र-छात्राओं को अपना प्रस्तुतिकरण दिया। प्रा. सराफ ने कहा कि आज हर्बल उद्योग का युग है, जिसमें वनस्पति शास्त्र के छात्र-छात्राओं को भाग लेना अति आवश्यक है, जिसमें छात्र-छात्राओं को पादप टेक्सोनॉमी, साइटोलॉजी, जेनेटिक इंजीनियरिंग आदि के माध्यम से वनस्पति से उद्योग तक पहुँचने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने सभी एम.एससी छात्र-छात्राओं के कैरियर निर्माण एवं उनको आगे बढ़ने हेतु प्रेरित किया साथ ही उन्होंने बहु संकायों जिनमें वनस्पति विज्ञान, फार्मेसी, रसायन शास्त्र, जैव तकनीकी, सूक्ष्मजीव विज्ञान इत्यादि विषयों को मिलकर शोध कार्य करने के पर जोर दिया।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. विजय लक्ष्मी नायडू द्वारा किया गया। वनस्पति शास्त्र परिषद के अध्यक्ष के रूप में दीपक कुमार (एम.एससी तृतीय सेमे.) उपाध्यक्ष - चंचल (एम.एससी प्रथम सेमे.) सचिव-हीना देवांगन (एम.एससी तृतीय सेमे.) सहसचिव रोहन शर्मा तथा अतेन्द्र सिन्हा एवं हर्षराज भ्रमण सचिव नियुक्ति किया गया। कार्यक्रम में सभी एम.एस-सी. प्रथम एवं तृतीय सेमे. के छात्रों का योगदान रहा साथ ही विभागीय सदस्यों के रूप में मोतीराम साहू डॉ. राजेश्वरी प्रभा लहरे, डॉ. स्वप्निता शिंदे एवं संकल्पा चन्द्रा का भी विषेष योगदान रहा। तकनीकी सहायक के रूप में शैल तिवारी एवं लैब अटेंटेडेट के रूप में मोहित का भी योगदान रहा।

Activities of the Placement and Carrier Councelling Cell

Placement and Carrier Councilling Cell in association with IBS Business School organised a one day workshop titled Student Development Program on Generative AI : Chat GPT on 24.09.2024. The workshop was attended by a large number of students , research scholars and faculty members.

The Cell in association with Reserve Bank of India organised a RBI 90 Quiz Programme for the under graduate students of the college on 11.09.24. The quiz was held nation wide to commemmorate 90 years of RBI's function. The programme saw the participation of 64 students of the college.

The Cell in association with the National Institute for Entrepreneurship and Small Business Development (NIESBUD) , organised EAP training programme for the students of the college to promote entreprenuir ship and skill development ,on 18.09.24 - 20.09.24.This programme was attended by 154 students who greatly benefitted from this training programme.

ICICI Bank on being invited by the cell visited and held campus placement for the students of the college. As good as 07 students were selected for recruitment by the bank.

Ten Day Workshop on Dramatics Concludes in College

The ten day workshop on dramatics titled 'Presentation Oriented Training Workshop' ,funded by PM-USHA ,organized by the drama club 'Abhirang' in association with Kala Sahitya Academy Durg- Bhilai concluded on 14.02.2024. The workshop that focused on training the students on various nuances of stage-craft like dance, music,enactment etc was conducted by twelve senior artists related to Kala Sahitya Academy, Durg-Bhilai from 05.02.2024 to 14.02.2024

The valedictory ceremony began with paying obeisance to goddess Saraswati followed by the garlanding of the deity. Dr. K. Padmavati ,in her welcome address ,spoke on the relevance of the workshop in the lives of the students and of its benefits in the development of personality which is a pre- requsite for a successful career. Speaking on the occasion ,Dr M.A.Siddique , Principal and mentor of college highlighted the importance of stagecraft in our lives. He exhorted the students to participate in such activities wholeheartedly and follow the discipline of art for future benefit.

Addressing the gathering Shri Manimay Mukherjee , President of Kala Sahitya Academy Durg - Bhilai , said that all have the potential for acting. With regular practice finesse in acting can be gained. He congratulated the participants for the dedication they exhibited during the workshop. He hoped that the fire for stagecraft would continue to burn in them.

The programme also saw the presence of other senior artists of the academy. Shri Shaktipad Chakraborty, Shri Babloo Biswas, Shri Rakesh Bambardey, Shri Harjinder Singh , Shri Vibhash Upadhey, Shri Gulam Haider, Shri Jai Prakash Nair, Smt. Sumita Pati, Smt. Suchita Mukherjee, Ms. Akanksha Sharma and Shri Pawan Kaushik were kind enough to grace the occasion.

The students then demonstrated the skills of stagecraft they had learnt and polished during the workshop. Certificates of participation were then given to the students by the senior artists. The programme was conducted by Dr. Jyoti Dharkar and attended by a large number of college fraternity. Dr. JP Sao, Dr. K. Padmavati, Dr. Krishna Chatterjee, Dr.Anupama Kashyap , Dr. Tarlochan Kaur ,Dr. Jainendra Diwan and Dr. Rajneesh made special efforts to make the workshop a success.

Knowledge Sharing and Care For Society By Students Of MSc Physics

PG Students of Dept of Physics Govt VYT PG College Durg, extended their expertise and shared their experimental knowledge to train students of BSc First and Second Yr of Govt Atmanand English Medium College, Durg on 20th Jan 2024. An active participation of students created a positive ambience in the laboratory session. Students of Govt Atmanand EMM College enthusiastically grasped the concepts and enjoyed Learning by Doing . Dr Jagjeet Kaur Saluja, Head Dept of Physics, Dr R S Singh Congratulated students for making efforts to reach out to students of other colleges. Dr Siteshwari Chandrakar , Dr Abhishek Mishra and Dr Kusumanjali Deshmukh also supported students for successful conduction of the activity. Dr Vikas Panchakashri Principal I/Cand Dr Hema Kulkarni Head and I/C physics Atmanand College extended all possible help for organising the Activity.

Quite encouraging and Overwhelming feedback received from Pushpraj, Somika and Anil.

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत शिक्षण में नवाचार

जियो अंताक्षरी के माध्यम से एमएससी-भूगर्भशास्त्र के विद्यार्थियों को दी गई भूगर्भ शास्त्र की जानकारी

महाविद्यालय में भूगर्भशास्त्र विभाग में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत शिक्षण में नवाचार का प्रयोग भूगर्भशास्त्र विभाग द्वारा किया गया जिसमें बड़ी सफलता मिली। यह जानकारी देते हुए भूगर्भशास्त्र के विभागाध्यक्ष, डॉ. एस. डी. देशमुख ने बताया कि भूगर्भशास्त्र विभाग में एमएससी प्रथम सेमेस्टर एवं एमएससी तृतीय सेमेस्टर के सभी नियमित विद्यार्थियों को भूगर्भशास्त्र की विभिन्न शाखाओं एवं महत्वपूर्ण जानकारियों से अवगत कराने हेतु विभाग के सहायक प्राध्यापक, डॉ. प्रशांत श्रीवास्तव के नेतृत्व में ''जियो अंताक्षरी'' का आयोजन किया गया। इसके अंतर्गत अंताक्षरी की तरह प्रत्येक शब्द के अंतिम अक्षर पर आधारित भूगर्भशास्त्र से जुड़े किसी बिन्दु का उल्लेख करना था। अपने आप में अनूठे इस प्रकार के आयोजन से विद्यार्थियों में जहां भूगर्भशास्त्र के प्रति नई उर्जा का संचार हुआ वहीं लगभग डेढ़ घंटे तक चली इस जियो अंताक्षरी में विजयी होने के लिए सभी प्रतिभागियों ने अपने बौद्धिक कौशल का भरपूर प्रदर्शन किया।

डॉ. देशमुख के अनुसार डॉ. प्रशांत श्रीवास्तव ने इस जियो अंताक्षरी में विद्यार्थियों को खनिज, चट्टान, जीवाश्म, क्रिस्टल, भूमिगत जल, भू-आकृति, भू-संरचनाएं आदि की रोचक जानकारी भी दी। विद्यार्थियों ने जियो अंताक्षरी के आयोजन को उनके लिए अत्यंत ज्ञानवर्धक बताया तथा कहा कि इस प्रकार के नवाचार से विद्यार्थी सीधे लाभान्वित होते हैं। इस अंताक्षरी के आयोजन में भूगर्भशास्त्र विभाग के डॉ. विकास स्वर्णकार, डॉ. इन्द्रजीत साकेत तथा प्रयोगशाला तकनीशियन, श्री दिनेश मिश्रा का सक्रिय योगदान रहा।

साहित्य समिति द्वारा निबंध प्रतियोगिता का आयोजन

महाविद्यालय की साहित्य समिति द्वारा ''नई शिक्षा नीति : चुनौतियाँ एवं समाधान'' विषय पर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन प्राचार्य डॉ. एम.ए. सिद्धीकी के मार्गदर्शन में किया गया ।

साहित्यिक समिति द्वारा इस तरह की रचनात्मक गतिविधियों का आयोजन समय-समय पर किया जाता रहा है । इस निबंध प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया ।

साहित्यिक समिति की प्रभारी डॉ. के पद्मावती एवं सदस्यों डॉ. अनुपमा कश्यप, डॉ. तरलोचन कौर, डॉ. ज्योति धारकार एवं श्री जनेन्द्र दीवान की सक्रिय भागीदारी रही ।

सहायक प्राध्यापकों का सेवानिवृत्ति सम्मान समारोह

महाविद्यालय द्वारा महाविद्यालयों के वरिष्ठ प्राध्यापकों के सेवा निवृत्ति के अवसर पर विदाई समा-रोह आयोजित किया गया, जिसमें महाविद्यालय के तीन वरिष्ठ प्राध्यापकों डॉ. जय प्रकाश साव (हिन्दी) डॉ. कृष्णा चटर्जी (हिन्दी) एवं. डॉ. नूतन राठौड़ (रसायन शास्त्र) को सम्मानित कर सेवानिवृत्ति होने पर विदाई दी गयी । इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में प्राचार्य डॉ. एम.एम. सिद्धीकी एवं वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ.एस.एन. झा, डॉ. अनुपमा अस्थाना, डॉ. अभिनेष सुराना कार्यक्रम में उपस्थित रहे ।

कार्यक्रम का प्रारम्भ माँ सरस्वती के पूजन एवं वंदना से हुआ। संगीत महाविद्यालय के अतिथि प्राध्यापक (शास्त्रीय गायन) श्री गजेन्द्र यादव एवं गुलशन निषाद (तबला) ने अपनी सुमधुर वाणी से सरस्वती वंदना व स्वागत गान प्रस्तुत किया । इसके पश्चात संस्था प्रमुख प्राचार्य डॉ. एम.एम. सिद्धीकी सभी सेवानिवृत्त हो रहे प्राध्यापकों को पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत किया ।

इस अवसर पर डॉ. एम. ए. सिद्धीकी ने सभी सेवा निवृत्त हो रहे प्राध्यापकों के साथ बिताये पलों को याद किया साथ ही उनके सुनहरे भविष्य एवं स्वस्थ के लिये शुभमंगल कामना की । डॉ. सिद्धीका ने कहा कि प्राध्यापक वर्ग समाज का एक बौद्धिक वर्ग है, समाज को उनसे लगातार प्रेरणा मिलती रहती है । प्राचार्य डॉ. एम.ए सिद्धीकी ने शॉल, श्रीफल एवं स्मृति चिन्ह देकर सेवानिवृत्त हो रहे प्राध्यापकों को सम्मानित किया । महाविद्यालय में नव नियुक्त सहायक प्राध्यापक (प्राणीशास्त्र) श्री अनुराग मिश्रा एवं श्री सुदेश साहू तथा अंग्रेजी विभाग की सहायक प्राध्यापक सुश्री सीमा पंजवानी का भी महाविद्यालय परिवार की ओर से स्वागत किया गया ।

तत्पश्चात् सेवानिवृत्त हो रहे सहायक प्राध्यापक डॉ. जे.पी. साव ने समाज में शिक्षा के निरन्तर गिरते स्तर पर चिन्ता व्यक्त की एवं उनमें सुधार की आवश्यकता पर बल दिया ताकि आने वाली पीढ़ियों पर सकारात्मक प्रभाव पड़े । उन्होंने इस अवसर पर मध्य प्रदेश एवं छत्तीसगढ़ शासन उच्चशिक्षा विभाग को विशेष धन्यवाद दिया, जिन्होंने उन्हें सेवा का अवसर प्रदान किया । उन्होंने महाविद्यालय के सभी प्राध्यापकगणों का सहयोग के लिये धन्यवाद दिया तथा अपने कार्यकाल में संयोजक आईक्यूएसी नियंत्रक, आटोनॉमस एवं सदस्य छात्रसंघ के साथियों के प्रति सहयोग के लिये

आभार व्यक्त किया । ज्ञातव्य है कि डॉ. जय प्रकाश साव हिन्दी के प्रख्यात राष्ट्रीय स्तर के लेखक है, जिनकी रचनात्मक एवं आलोचक एवं व्यंग्यकार के रूप में साहित्य में परिलक्षित होती है । उन्होंने कई विद्यार्थियों का शोध कार्य पूर्ण करने में अपना विशेष योगदान दिया । उनकी तीन पुस्तकें (कहानी की उपस्थिति लोक का अंतः संसार एवं मुक्तिबोध की वृहत जीवनी दो खण्डों में) राष्ट्रीय स्तर पर काफी प्रसिद्ध है ।

इसी क्रम में सेवानिवृत्त हो रही हिन्दी विभाग की सहायक प्राध्यापक डॉ. कृष्णा चटर्जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि उन्होंने अपनी सम्पूर्ण सेवाकाल के दौरान बेमेतरा, दुर्ग महाविद्यालय में सेवाएं प्रदान की है । उनके मार्गदर्शन में पाँच विद्यार्थियों ने अपना शोध कार्य पूर्ण किया है तथा कई गीत एवं रचनाएं राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय स्तर पर प्रकाशित हुई है । उन्होंने समाज में बेटियों के प्रति हो रहे अन्याय को अपनी सुमधुर कविता के माध्यम से प्रस्तुत किया एवं बेटियों के प्रति समाज में सकारात्मक सोच को आगे बढ़ाने की बात कही । रसायन शास्त्र विभाग की सहायक प्राध्यापक डॉ. नूतन राठौड़ अपने सम्पूर्ण सेवाकाल के दौरान शासकीय महाविद्यालय में पूर्ण किये गये अपने अनुभव का साझा किये । डॉ. राठौड़ द्वारा विभिन्न प्रकार की परीक्षाओं व समितियों के कार्य के दौरान सहयोग हेतु सभी प्राध्यापकगणों का विशेष धन्यवाद दिया । ज्ञातव्य है कि डॉ. राठौड़ अकार्बनिक रसायन विज्ञान के क्षेत्र में प्रसिद्ध विषय विशेषज्ञ हैं । वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. डॉ.एस.एन. झा, डॉ. अनुपमा अस्थाना, डॉ, अभिनेष सुराना एवं कार्यालय के मुख्य लिपिक श्री संजय यादव ने भी सेवानिवृत्त हो रहे प्राध्यापकों के प्रति अपनी भावनाएँ व्यक्त की।

कार्यक्रम का सम्पूर्ण एवं सफल संचालन डॉ. के. पदमावती ने किया एवं आभार प्रदर्शन वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. ए.के. खान ने किया । इस कार्यक्रम में महाविद्यालय के सम्पूर्ण प्राध्यापकगण, तृतीय एवं चतुर्थ श्रेणी के सभी कर्मचारीगण उपस्थित रहें । कार्यक्रम के सफल आयोजन में स्टॉफ क्लब के डॉ. के पदमावती, डॉ. ज्योति धारकर, डॉ. सतीश कुमार सेन, डॉ.प्रदीप जांगड़े, क्रीड़ा अधिकारी श्री लक्ष्मेन्द्र कुलदीप, श्री तरूण साहू एवं श्रीमोती राम साहू का विशेष योगदान रहा ।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 एवं उच्च शिक्षा : एक परिदृश्य

डॉ. एस.एन.पाण्डेय (अंग्रेजी विभाग)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक महत्वाकांक्षी शिक्षा नीति है। इसमें विकसित भारत 2047 के परिकल्पना को साकार करने की समस्त सम्भावनाएँ विद्यामान है एवं भारतीय शिक्षा एवं ज्ञान परंपरा को वैश्विक स्तर पर स्थापित करने महत्वाकांक्षी प्रावधानों से परिपूर्ण है। उच्च शिक्षा विभाग छत्तीसगढ़ शासन द्वारा सन् 2022-23 से प्रदेश के चुनिंदा, स्वशासी महाविद्यालयों में पायलट प्रोजेक्ट के तहत इसे प्रथम चरण में लागू किया गया, जिसमें शिक्षा के बहुआयामी दृष्टिकोंण के साथ-साथ मल्टी इन्ट्री एंव मल्टी इक्जिट के साथ पाठ्यक्रमों को क्रेडिट सिस्टम से निरूपित किया गया है। किसी एक संकाय में प्रवेश के इच्छुक छात्र को अपने संकाय के तीन मेजर विषय के साथ-साथ किसी दूसरी संकाय की एक जेनेरिक इलक्टिव पेपर, एक दक्षता बढ़ाने वाले पेपर, एव स्किल बढ़ाने के पेपर के साथ साथ मूल्य वृद्धि करने वाले एक पेपर के अध्ययन की व्यवस्था इन्टी लेवल पर सुनिश्चित की गयी है ताकि एक विद्यार्थी अपने डिसीप्लीन के अध्ययन के साथ साथ दूसरे डिस्पलीन के विषय का एक पेपर का इन्ट्री लेवल तथा आने वाले अन्य सेमेस्टर में अध्ययन कर अपना सर्वांगीण विकास सुनिश्चित कर सके। साथ ही एक विद्यार्थी को दक्षता बढ़ाने वाले प्रश्न पत्र के साथ मूल्यपरक शिक्षा की अनिवार्यता को रेखांकित किया गया है ताकि छात्र के समग्र विकास को सुनिश्चित करते हुये विभिन्न प्रकार के राष्ट्रीय एवं राज्य है स्तरीय प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करने किन्ही अन्य कोचिंग आय संसाधनों पर निर्भरता को कम कर अन्ततः समाप्त किया जा सके तथा स्किल निर्माण एवं दक्षता बढ़ाने वाले पशन-पत्र से स्वरोजगार की तरफ उनमुख कर नौकरी मांगने वाले की जगह नौकरी प्रदान करने वाला उद्यमशीलता विकसित किया जा सके, जो कि समय की माँग है। यह शिक्षा नीति वार्षिक परीक्षा पद्धति की जगह सेमेस्टर प्रणाली पर आधारित है।

उच्च शिक्षा विभाग छत्तीसगढ़ शासन द्वारा सत्र 2024-25 से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को प्रदेश के समस्त शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में समान रूप से लागू किया गया है जो समस्त स्नातक डिग्री पाठ्यक्रम में लागू किया गया, डिप्लोमा एवं शिक्षा स्नातक को इससे अलग रखा गया है। यह पूर्व की भाँति तीन या चार साल (कुल 6 या 8 सेमेस्टर) की होगी, जिसके अन्तर्गत एक विद्यार्थी एक से अधिक बार प्रवेश एवं निकासी कर सकेगा। यह 'च्वाइस बेस्ड एवं क्रेडिट सिस्टम' पर आधारित है। पाठ्यक्रम क्रेडिट तथा लर्निंग आडटकम पर भी आधारित है। इसमें पाठ्यक्रम अर्न्तविषयी एवं बहुविषयी है। पाठ्यक्रम को एक साल की जगह छः-छः महीनों की सेमेस्टर में विभक्त किया गया है। प्रत्येक सेमेस्टर का पाठ्क्रम कुल 20 क्रेडिट का है, जिसमें चार-चार क्रेडिट के तीन मेजर एवं एक जेनेरिक इसेक्टिव (यह दूसरे डिसि-प्लीन से लिया जाना अनिवार्य होगा) तथा दो-दो क्रेडिट की एक दक्षता वृद्धि एवं एक मूल्य निर्माण पाठ्यक्रम होंगें।

एक साल में कुल 40 क्रेडिट का पाठ्यक्रम पूर्ण करने तथा आगे पढ़ाई जारी न01 रख सकने की स्थिति में महाविद्यालय स्तर पर 04 क्रेडिट का अतिरिक्त पाठ्यक्रम पूर्ण कराकर कुल 44 क्रेडिट पूर्ण करने पर सर्टिफिकेट प्रदान किये जाने की व्यवस्था है जो वार्षिक परीक्षा पद्धति में नहीं थी। तथा एक छात्र दो साल में 80 क्रेडिट के पाठ्यक्रम को पूर्ण करने उपरान्त यदि आगे पढ़ाई जारी रखने में सक्षम नहीं रहता है तो उसे महाविद्यालय स्तर पर 04 क्रेडिट के अतिरिक्त पाठ्यक्रम को पूर्ण कराकर कुल 84 क्रेडिट पूर्ण करने पर डिप्लोमा की पात्रता होगी। इसी प्रकार यदि कोई छात्र तीन साल, छः सेमेस्टर की परीक्षा उत्तीर्ण कर आगे पढ़ाई जारी रखने की स्थिति में नहीं है अथवा उसका एग्रीगेट 75प्रतिशत से कम है तो उसे कुल 120 क्रेडिट का पाठ्यक्रम पूर्ण करने पर डिग्री प्रदान किया जायेगा। किन्तु यदि कोई छात्र 04 वर्ष, आठवाँ सेमेस्टर के साथ 160 क्रेडिट पाठ्यक्रम पूर्ण कर लेता है तो उसे स्नातक ऑनर्स की डिग्री तथा 164 क्रेडिट का पाठ्यक्रम पूर्ण करने पर स्नातक ऑनर्स वीथ रिसर्च की डिग्री प्रदान की जायेगी तथा ऐसे छात्र के लिए स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम एक वर्ष का होगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में 15 घण्टे की पढ़ाई पूर्ण करने पर 01 क्रेडिट की पात्रता होगी। मेजर विषय/पेपर जो 04 क्रेडिट के हैं उनमें 30 अंक का सी.आई.ए. (आन्तरिक मूल्यांकन) तथा 70 अंक सेमेस्टर अन्त परीक्षा के लिए नियत है। इसी प्रकार 02 क्रेडिट के पाठ्यक्रम में आन्तरिक मूल्यांकन 15 अंक तथा सेमेस्टर अन्त परीक्षा 35 अंक के होंगें। मेजर पेपर जो 04 क्रेडिट के होंगे उसमे उत्तीर्णांक 40 अंक तथा माइनर जो 02 क्रेडिट के होंगे उसमें उत्तीर्णांक उत्तीर्णांक 20 अंक होगा।

किसी भी छात्र को पहले दो सेमेस्टर में जेनेरिक इलेक्टिव, जो दूसरे डिसिप्लीन का होगा, पढ़ना अनिवार्य होगा किन्तु तीसरे सेमेस्टर से वह छात्र या तो GE - 3 या DSE - 1 चयन करने की छूट होगी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 छात्रों के सर्वांगीय विकास, अत्मनिर्भर बनाने, एवं स्किल डेवलपमेंट प्रोग्राम की मदद से उद्यमी एवं स्वरोजगारोन्मुख बनाने की दिशा में मील का पत्थर साबित होगा।

प्रशासन अकादमी रायपुर में प्राचार्य पद संबंधी प्रशिक्षण पा रहे प्राध्यापकों ने किया साईंस कॉलेज दुर्ग का भ्रमण

प्रशासन अकादमी निमोरा, रायपुर में उच्चशिक्षा विभाग छत्तीसगढ़ शासन के निर्देशानुसा आयोजित 3 सप्ताह के तीन समूहों ने प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल होने वाले छत्तीसगढ़ प्रदेश के सभी जिलों के लगभग 30 प्राध्यापकों के तीन समूहों ने महाविद्यालय का भौतिक रूप से भ्रमण किया ।

महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. एम.ए. सिद्धकी ने बताया कि चूँकि प्रशिक्षण प्रप्त कर रहे सभी प्राध्यापक भविष्य में महाविद्यालयों में प्राचार्य पद का दायित्व निवर्हन करेंगे, इसलिए उच्चशिक्षा विभाग उन्हें दुर्ग साईंस कॉलेज का भ्रमण करवाकर महाविद्यालय के सर्वांगीण विकास हेतु आवश्यक बिन्दु से अवगत कराना चाहता है। डॉ. सिद्धकी के अनुसार साईंस कॉलेज दुर्ग प्रदेश का पहला एवं एकमात्र ए प्लस ग्रेड प्राप्त शासकीय महाविद्यालय है। इस महाविद्यालय की पठन-पाठन, शोध, खेलकूद, एन.एस.एस., एन.सी.सी., यूथ रेडक्रास एवं अन्य गतिविधियाँ तथा कैम्पस प्लेसमेंट उल्लेखनीय है। इन्हीं सब बिन्दुओं को प्रशिक्षणिर्थियों/प्राध्यापकों को अवगत कराकर उनके मन में अपने-अपने महाविद्यालयों में इसी प्रकार की रचनात्मक /गतिविधियों का आयोजन राज्य शासन का मुख्य उद्देश्य है ।महाविद्यालय के सहायक प्राध्यापक डॉ. प्रशांत श्रीवास्तव ने बताया कि प्राध्यापकों के भ्रमण के दौरान प्रारम्भ में उनका स्वागत, डॉ. अनुपमा अस्थाना, डॉ. जगजीत कौर सलूजा, डॉ. प्रज्ञा कुलकर्णी, डॉ. सुनीता बी. मैथ्यु, डॉ. संजु सिन्हा, प्रो. तरूण साहू ने किया। डॉ. जगजीत कौर सलूजा ने पॉवर प्वाइंट प्रस्तुतिकरण के माध्यम से महाविद्याल की विगत 5 वर्षों की उपलब्धियों का उल्लेख किया ।

नैक की नई मूल्यांकन प्राणाली तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर डॉ. प्रशांत श्रीवास्तव ने अपने विचार रखें । इसके पश्चात प्राध्यपकों के दल ने महाविद्यालय में उपलब्ध बायो-रिर्सोसे सेन्टर, आधुनिक प्रयोगशालायें, लगभग एक लाख से अधिक पुस्तक क्षमता वाले ग्रंथालय, बायो टेक्नालॉजी विभाग तथा नवनिर्मित डॉ. राधाकृष्णन हॉल का अवलोकन किया ।

सभी प्राध्याापकों ने साईंस कॉलेज, दुर्ग की उपलब्धियों एवं अधोसंचरना की प्रशंसा की । प्राध्यापक प्रशिक्षणर्थियों को सम्बोधित करते हुए प्राचार्य डॉ. सिद्धीकी ने कहा कि यदि ये महाविद्यालय के विकास हेतु कोई रचनात्मक सुझाव देना चाहते हैं तो हम उसका समावेश महाविद्यालय के विकास हेतु करेंगे ।

महाविद्यालय में प्राध्यापकों एवं विद्यार्थियों ने रोपे पौधे

एनएसएस विद्यार्थी प्रतिवर्ष वृक्षारोपण अभियान आयोजित करते हैं जिसमें सभी प्राध्यापक एवं विद्यार्थी पौधे लगाते हैं तथा उसकी रक्षा का संकल्प लेते हैं। इसी तारतम्य में भारत सरकार एवं छत्तीसगढ़ शासन के निर्देश पर इस वर्ष 'एक पेड़ मां के नाम' महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ एम ए सिद्धिकी के मार्गदर्शन में विद्यार्थियों, एवं प्राध्यापकों द्वारा महाविद्यालय में विभिन्न प्रजातियों के फलदार एवं फूलदार पौधे रोपे गए। जिसमें नीम, करंज, बेल, कचनार इत्यादि प्रमुख थे। इस अवसर पर प्राचार्य ने बताया कि हमें पर्यावरण को बचाने के लिए पौधे अधिक से अधिक संख्या में लगाने की जरूरत है। आज सबसे बड़ी चुनौती है पर्यावरण संतुलन

को बनाए रखने की है इसके लिए हम पौधे लगाएं तथा उसकी रक्षा करें । सभी विद्यार्थी एवं कर्मचारियों से आह्वान किया कि वे अपने जन्मदिन या शुभ अवसरों पर वृक्ष लगाएं। डॉ. अभिनेषश्सुराना, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष हिन्दी ने पर्यावरण के लिए वृक्षारोपण एवं संरक्षण को आवश्यक बताया।

महाविद्यालय में वीर बाल दिवस का भव्य आयोजन
वीर बाल दिवस सिखों की शहादत के प्रति सम्मान का दिन

वीर बाल दिवस सिखों की शहादत के प्रति सम्मान का दिन का है। हम सभी को गुरू गोविंद सिंह जी के चार वीर पुत्रों के अद्वितीय बलिदान और साहस का सम्मान करना चाहिए। यह निष्कर्ष शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय में राधाकृष्णन हॉल में आयोजित बाल वीर दिवस समारोह के दौरान विभिन्न वक्ताओं के द्वारा दिए गए उद्बोधन में सामने आया।

यह जानकारी देते हुए कार्यक्रम की संचालक डॉ. ज्योति धारकर ने बताया कि लगभग 500 से अधिक छात्र-छात्राओं, प्राध्यापकों की उपस्थिति में अपना आमंत्रित वक्तव्य देते हुए भिलाई इस्पात संयत्र से सेवानिवृत्त मुख्य वक्ता डॉ. साहेब सिंह जी ने बताया कि वीर बाल दिवस गुरू गोविंद सिंह के छोटे साहिब जादों - जोरावर सिंह तथा फतेहसिंह के बलिदान को समर्पित है। धर्म व मानवता के रक्षा के लिए जब उन्होंने अपने प्राण न्यौछावर किये तक जोरावर सिंह की उम्र मात्र 9 वर्ष तथा फतेहसिंह जी की उम्र मात्र 6 वर्ष थी। श्री साहेब सिंह जी ने विस्तार से सिख धर्म की परंपराओं एवं विरासत पर प्रकाश डालते हुए बालकों की शहादत का शब्द चित्र प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे साईंस कालेज, दुर्ग के प्राचार्य डॉ. अजय कुमार सिंह ने कहा कि सिख धर्म की बलिदान की महान परंपरा को जन-जन तक पहुँचाना ही इस कार्यक्रम का उद्देश्य है। डॉ. सिंह ने धर्म से जुड़े महत्वपूर्ण तथ्यों पर प्रकाश भी डाला। महाविद्यालय के वाणिज्य विभाग के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. एच.पी. सिंह सलूजा ने सिख गुरूओं के सम्पूर्ण इतिहास एवं वीर बालकों की शहादत से संबंधित रोमांचक विवरण प्रस्तुत किया। डॉ. सलूजा ने सिख बालकों के साथ किए गए अत्याचार तथा विभिन्न प्रताड़नों का जब उल्लेख किया तो पूरे राधा कृष्णन सभागार में सन्नाटा छा गया। प्रत्येक उपस्थित प्रतिभागियों का सर सिख बालकों के बलिदान के आगे नतमस्तक हो गया। महाविद्यालय की अंग्रेजी विभाग की सहायक प्राध्यापक डॉ. तरलोचन कौर संधू ने बाबा जोरावर सिंह तथा बाबा फतेह सिंह की शहादत पर वक्ताओं द्वारा दिए गए ऐतिहासिक व्याख्यानों का विस्तार से उल्लेख किया। उन्होंने गुरूमुखी भाषा में सिखों के बलिदान से संबंधित कुछ कविताऐं भी प्रस्तुत की।

माता सरस्वती की पूजन के साथ आरंभ हुए इस कार्यक्रम में राजनीति शास्त्र के विभागाध्यक्ष डॉ. शकील हुसैन ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि 26 दिसंबर ही नही बल्कि सम्पूर्ण दिसंबर माह सिख धर्म के बलिदान की याद दिलाता है। कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन अर्थशास्त्र की विभागाध्यक्ष डॉ. के. पद्मावती ने किया।

राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा राष्ट्रीय सद्भावना दिवस का आयोजन

महाविद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना छात्रा इकाई के द्वारा 'राष्ट्रीय सद्भावना दिवस' मनाया गया। इस कार्यक्रम में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. एम.ए. सिद्दीकी द्वारा विद्यार्थियों को शपथ दिलाया गया। प्राचार्य महोदय ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि हमें जाति, सम्प्रदाय, क्षेत्र, धर्म तथा भाशा का भेदभाव किये बिना सभी भारतवासी की भावनात्मक एकता और सद्भावना के लिए कार्य करना चाहिए।

इस कार्यक्रम में स्वशासी भवन की नियंत्रक, डॉ. जगजीत कौर सलूजा एवं अन्य प्राध्यापक उपस्थित रहे। शपथ ग्रहण के पूर्व राष्ट्रीय सेवा योजना की नियमित गतिविधि की कक्षा लगायी गई, जिसमें मानव श्रृंखला, सद्भावना गीत, रा.से.यो. के खेल आदि गतिविधियां करायी गयी। सद्भावना दिवस के अवसर पर सभी स्वयं सेविकाओं ने सद्भावना दिवस के संबंध में जानकारी सांझा किया।

यह कार्यक्रम डॉ. मीना मान (कार्यक्रम अधिकारी) के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ, जिसमें 'राष्ट्रीय सेवा योजना' की स्वयं सेविका टोमेश्वरी, रागिनी साहू , श्रेया चौहान, भावना घृतलहरे, खुशबू ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

अर्थशास्त्र विभाग में एलुमनी मीट

महाविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग में भूतपूर्व छात्रों का बैठक आयोजित किया गया, जिसमें काफी संख्या में भूतपूर्व छात्र-छात्राओं ने प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में अर्थशास्त्र विभागाध्यक्ष डॉ. के. पद्मावती, डॉ. अंशुमाला चन्दनगर, डॉ. नीता मिश्रा, डॉ. जिज्ञासा पाण्डेय उपस्थित रहे। इसके पश्चात् विभागाध्यक्ष डॉ. के. पद्मावती के स्वागत भाषण से कार्यक्रम शुरूआत हुई। पूर्व छात्रों के द्वारा महाविद्यालय में अध्ययनरत् क्षणों एवं प्राध्यापकों के साथ व्यतीत किए गए समय को स्मरण किया गया।

अधिकांश छात्र सफलता के अनेक सोपनों को प्राप्त कर चुके है, इनमें से कुछ छात्र सहायक प्राध्यापक कुछ व्याख्याता एवं अन्य अनेक स्थानों पर अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे है। कार्यक्रम की अगली कड़ी में डॉ. अंशुमाला चन्दनगर द्वारा पूर्व छात्रों को सम्बोधित कर उनके उज्जवल भविष्य की कामना की गई।

कार्यक्रम के प्रारंभ में छात्रों को पुष्प प्रदान किया गया। छात्रों द्वारा इस बैठक के आयोजन के लिए विभाग को धन्यवाद दिया गया। विद्यर्थियों ने समय-समय पर महाविद्यालय में उपस्थित होकर महाविद्यालय से जुड़े रहने एवं जो सहयोग महाविद्यालय को अपेक्षित होगा वे सहयोग करेंगे यह आश्वासन दिया। समय-समय पर इस तरह की बैठक आयोजित करने का आग्रह किया गया। अंत में धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

महाविद्यालय में उच्चशिक्षा सचिव ने ली प्राध्यापकों की बैठक

छत्तीसगढ़ में 36 महाविद्यालय बनेगें सेंटर ऑफ एक्सीलेंस - आर. प्रसन्ना

छत्तीसगढ़ में 36 महाविद्यालय को सेंटर ऑफ एक्सीलेंस बनाने की प्रक्रिया जारी है। इस संबंध में विभिन्न महाविद्यालयों से निर्धारित प्रपत्र में आवेदन माँगये गये है, जिन पर विचार जारी है। ये विचार छत्तीसगढ़ शासन उच्चशिक्षा विभाग के सचिव श्री आर. प्रसन्ना ने महाविद्यालय में व्यक्त किये।

उच्चशिक्षा सचिव यहाँ नियमित एवं अतिथि प्राध्यापकों की बैठक में अपना संबोधन कर रहे थे। दुर्ग संभाग के आयुक्त, श्री सत्य नारायण राठौर तथा दुर्ग कलेक्टर सुश्री ऋचा प्रकाश चौधरी की उपस्थिति में साईंस कालेज, दुर्ग के राधाकृष्णन सभागार में श्री प्रसन्ना ने महाविद्यालय द्वारा सेंटर ऑफ एक्सीलेंस बनाये जाने हेतु भेजे गये 32 करोड़ रूपये की लागत वाले प्रस्ताव पर आधारित पावर प्वाइंट प्रस्तुतिकरण का अवलोकन किया। साईंस कालेज, दुर्ग की ओर से यह प्रस्तुतिकरण स्वशासी प्रकोष्ठ की नियंत्रक डॉ. जगजीत कौर सलूजा ने दिया।

श्री प्रसन्ना ने कहा कि उच्च शिक्षा विभाग द्वारा छत्तीसगढ़ हायर एजुकेशन मिशन की स्थापना की जारी है। इसके अंतर्गत महाविद्यालयों एवं शोधार्थियों को प्रयोगशाला, ग्रंथालय, शोध कार्य, शोध पत्र प्रकाशन अंतर्राष्ट्रीय कान्फ्रेंस में सहभागिता, पेटेंट प्राप्ति हेतु छत्तीसगढ़ शासन द्वारा सहायता राशि उपलब्ध करायी जायेगी। इसके अलावा श्री प्रसन्ना ने बताया कि छत्तीसगढ़ में रिसर्च तथा इनोवेशन फण्ड की भी स्थापना की जायेगी। बैठक का संचालन कर रहे भूगर्भशास्त्र के सहायक प्राध्यापक डॉ. प्रशांत श्रीवास्तव के अनुसार उच्चशिक्षा सचिव ने जानकारी दी कि महाविद्यालयों में अकादमिक तथा उद्योगों के मध्य सकारात्मक संबंध हेतु नयी योजना तैयार की जा रही है।

महाविद्यालयों में शैक्षणिक विकास हेतु उच्चशिक्षा विभाग द्वारा किए जा रहे प्रयासों की जानकारी देते हुए श्री प्रसन्ना ने बताया कि अगले शैक्षणिक सत्र से महाविद्यालयीन शिक्षकों के अध्यापन कार्य एवं कक्षा में व्यवहार पर केन्द्रित फीड बैक उस कक्षा के विद्यार्थिन्यों से लिया जायेगा। महाविद्यालयों के आकस्मिक निरीक्षण हेतु प्रत्येक जिले में जिला नोडल अधिकारियों की नियुक्ति भी की जायेगी। श्री प्रसन्ना के अनुसार अन्य विभागों की तरह उच्चशिक्षा विभाग में भी उत्कृष्ट कार्य करने वाले महाविद्यालयों, प्राचार्यों, प्राध्यापकों तथा अतिथि प्राध्यापकों को राज्य स्तर पर आयोजित सम्मान समारोह में पुरस्कृत किया जायेगा।

श्री प्रसन्ना ने बताया कि उन्होंने प्रत्येक अधिकारी एवं कर्मचारी से जुड़े लम्बित मामलों का शत-प्रतिशत निराकरण कर दिया है तथा यह प्रयास किया जा रहा है, कि प्राचार्य/प्राध्यापक/कर्मचारी को सेवा निवृत्ति की तिथि के दिन ही उन्हें देय सम्पूर्ण राशि से संबंधित दस्तावेज उपलब्ध कराया दिया जाये। श्री प्रसन्ना से प्रश्न पूछकर अपनी जिज्ञासा का समाधान करने वाले प्राध्यापकों में डॉ. प्रशांत श्रीवास्तव, डॉ. शकील हुसैन, डॉ. अजय पिल्लई, डॉ. अश्विनी महाजन, डॉ. रंजना श्रीवास्तव, डॉ. दिव्या मिंज, डॉ. उपमा श्रीवास्तव, डॉ. रचिता श्रीवास्तव, डॉ. ज्योति धारकर, डॉ. विकास स्वर्णकार शामिल थे।

बैठक में उपस्थित दुर्ग कलेक्टर सुश्री ऋचा प्रकाश चौधरी ने कहा कि महाविद्यालय में उपलब्ध आधुनिक उपकरणों को विद्यार्थियों के प्रयोग के साथ-साथ उद्योगों की आवश्यकतानुरूप कंसल्टेंसी कार्य आरंभ कर महाविद्यालय हेतु राशि प्राप्त करने का प्रयास करें। बैठक को अपर संचालक, उच्च शिक्षा डॉ. राजेश पाण्डेय तथा महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. अजय कुमार सिंह ने संबोधित किया।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अंतर्गत शिक्षा में नवाचार भूविज्ञान विभाग में नवीनतम विषय की जानकारी रहे एल्मुनी विद्यार्थी

महाविद्यालय, में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत शिक्षण में नवाचार के अंतर्गत भूगर्भशास्त्र विभाग में विभिन्न केन्द्र एवं राज्य सरकार के प्रतिष्ठानों में उच्च पदों पर आसीन एलुमनी महाविद्यालय आकर स्नातक एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थियों को विषय की नवीनतम जानकारी प्रदान कर रहे है। अपने आप में यह अनूठा प्रयोग है। यह जानकारी देते हुए भूगर्भशास्त्र के विभागाध्यक्ष डॉ. श्रीनिवास डी. देशमुख ने बताया कि भूतपूर्व छात्र विभिन्न प्रतिष्ठानों में वास्तविक रूप से फील्ड में कार्यरत् है, इसलिए भूगर्भशस्त्र जैसे विषय में विभिन्न खदानों, कारखानों, स्मेल्टर, इस्पात संयंत्रों आदि में उपयोग की जाने वाली नवीनतम तकनीक की जानकारी वर्तमान में अध्ययनरत् विद्यार्थियों को होना आवश्यक है। भूतपूर्व विद्यार्थी जब महाविद्यालय आकर वर्तमान विद्यार्थियों को नवीनतम तकनीकी जानकारी देते है, तो वह उनके लिए लाभदायक होती है। विभाग से पढ़कर उच्च पद प्राप्त करने के कारण अधिकांश भूतपूर्व विद्यार्थी आमंत्रित व्याख्यान हेतु कोई मानदेय अथवा यात्रा भत्ता भी स्वीकार नही करते है।

भू-गर्भशास्त्र विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. प्रशांत श्री-वास्तव ने बताया कि इसी श्रृंखला में कब तक भूगर्भशास्त्र के एलुमनी डॉ. बेनीधर देशमुख, इग्नु नई दिल्ली, श्री अमित सोनी, डाय-रेक्टर जी.एस.आई., श्री भुवनश्वर कुमार एवं श्री सुहांशु निगम भूवैज्ञानिक एम.ई.सी.एल., डॉ. अभिषेक देवांगन भूवैज्ञानिक सीएमडीसी श्री ओंकार साहू जे.पी. सीमेंट, श्री हेमंत धनकर, श्रीमती श्वेता एनएमडीसी, डॉ. चंचल सिंह, गुड़गांव, डॉ. स्वपना गुप्ता, जगदलपुर, श्री मनदीप सिंह, जियोलॉजी माइनिंग श्री धर्मेश साहू , श्री कोमल वर्मा, डॉ. विकास स्वर्णकार, कु. सृष्टि शर्मा, कु. स्वीटी, श्री आदित्य मानकर, श्री खिलवन द्वारा अपने व्याख्यान से वर्तमान में अध्ययनरत् विद्यार्थियों को नवीनतम जानकारी प्रदान की जा चुकी है। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. अजय कुमार सिंह ने भूगर्भशास्त्र द्वारा आरंभ की गयी शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार पद्धति की सराहना करते हुए कहा कि इस प्रकार के आयोजन से विद्यार्थियों में नवीनतम जानकारी के साथ-साथ उच्च पदों पर जाने की प्रेरणा भी मिलती है तथा आत्मविश्वास बढ़ता है। डॉ. सिंह ने अन्य विभागों से भी इसी प्रकार के आयोजन करने के बात कही।

महाविद्यालय में जनजातियों के गौरवशाली अतीत पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित

जनजातियों के उद्भव एवं विकास की वास्तविकता को समझना वर्तमान समय की प्रासंगिकता है। यह हमारा दायित्व है, कि जनजातीय समाज के गौरशाली ऐतिहासिक, सामाजिक, अध्यात्मिक इतिहास से वर्तमान युवा पीढ़ी को अवगत करायें, जिससे वे पर्यावरण संरक्षण एवं राष्ट्र के विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सके। यह विचार महाविद्यालय दिनांक 14.11.2024 को जनजातीय समाज का गौरवशाली अतीत : ऐतिहासिक, सामाजिक एवं आध्यामिक योगदान पर आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. अजय कुमार सिंह ने कार्यक्रम की रूपरेखा एवं आयोजन के उद्देश्य से श्रोताओं को अवगत कराया।

कार्यशाला का प्रारंभ सरस्वती वंदना, अतिथियों के स्वागत, स्वागत गान एवं राज्य गान से प्रारंभ हुआ। इसके पश्चात् महाविद्यालय के विद्यर्थियों द्वारा रंगारंग आदि नृत्य की प्रस्तुति दी गयी। प्राचार्य महोदय ने राष्ट्रके निर्माण में जनजातियों के योगदान को जानने, समझने एवं उस पर अमल करने की आवश्यकता को बताया। उन्होंने कहा कि भारत के प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी जी के योजनाओं पर अमल करते हुए इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया है।

ईश्वर का आर्शीवाद हमें तभी मिल सकता है, जब हम प्रकृति के अस्तित्व का सम्मान करेंगे। इस विचार के साथ दुर्ग शहर के माननीय विधायक, श्री गजेन्द्र यादव ने इस कार्यशाला में मुख्य अतिथि के रूप में अपना उद्‌बोधन प्रारंभ किया। श्री गजेन्द्र यादव ने अंग्रेजों के विरूद्ध आदिवासी जनजातियों की भूमिका पर प्रकाश डाला। साथ उन्होंने बताया कि देवगुड़ी, बूढ़ा देव तथा अन्य देवताओं के अस्तित्व एवं पर्यावरण संरक्षण में जनजातियों की विशेष भूमिका रही है। उन्होंने जनजातियों के उद्‌भव एवं उत्थान को सतयुग से लेकर अंडमान निकोबार तक के उदाहरणों से समझाया।

महाविद्यालय के नवनियुक्त जनभागीदारी अध्यक्ष एवं कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि श्री शिवेन्द्र परिहार ने भारत के इतिहास में जनजातियों के गौरवशाली योगदान की सराहना की। उन्होंने आव्हान किया कि वर्तमान पीढ़ी को जनजातियों के समृद्ध अतीत से परिचय कराना होगा, जिससे हमारी युवा पीढ़ी राष्ट्र निर्माण में अपना समृद्ध योगदान दे सके। श्री परिहार ने जनजातियों की विशेषताओ का वर्णन करते हुए बताया कि ये अत्यंत सरल एवं अत्यधिक परिश्रमी एवं कर्म के पुजारी होते है। ये इतने कर्मठ होते है, कि पूरी आस्था से भगवान के पूजा अर्चना करने के पश्चात् कार्य न होने पर भगवान की भी पेशी लगा देते है। उन्होंने वानरों को प्राचीन समय के आदि मानव बताया, जिसे वन में रहने वाला नर कहा तथा इन आदिमानवों की भूमिका का त्रेतायुग में श्री राम के सहायक के रूप में वर्णन किया। श्री परिहार ने जनजातियों की प्रशंसा करते हुए बताया कि वन में रहने वाली जनजातियां सदियों से पर्यावरण को संरक्षित किए हुए है। यदि हमें अपने पर्यावरण को संरक्षित करना है तो हमें अपनी जनजातियों को भी संरक्षित करने की आवश्यकता है।

एक दिवसीय कार्यशाला के विशिष्ट अतिथि एवं मुख्य वक्ता श्री सरजियस मिंज (पूर्व आई.ए.एस.), पूर्व अपर मुख्य सचिव, छत्तीसगढ़ शासन, छ.ग. ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि जनजातियां सन् 1857 की आजादी की क्रांति से बहुत पहले से ही अंग्रेजों के विरोध की गतिविधियों में सम्मिलित रहें है। उन्होंने जनजातियों द्वारा प्रकृति, कला एवं संस्कृति तथा अपने धरोहरों एवं प्राकृतिक संरक्षण की दिशा में किए गए कार्यों का विस्तृत उल्लेख किया।

उन्होंने छत्तीसगढ़ के विभिन्न प्रांतों का उदाहरण देकर जंगल की वास्तविक परिभाषा बतायी। साथ ही जनजातियों की सामाजिक समरसता तथा जनजाति समाज में महिलाओं की स्थिति पर प्रकाश डाला एवं आध्यामिक क्षेत्र में जनजातियों द्वारा प्रकृति को ईश्वर स्वरूप मानने की बात कही। उन्होंने बताया कि जनजाति समाज

अपना हर कार्य एवं धार्मिक अनुष्ठान प्रकृति के अनुसार ही आयोजित करते है। श्री मिंज ने युवा पीढ़ी को व्यक्तिगत संघर्षों के साथ-साथ जनजातियों के गौरवशाली अतीत बनाये रखने लिए उत्कृष्ट करने हेतु सबका आव्हान किया।

इस कार्यशाला के अध्यक्ष डॉ. राजश पाण्डेय क्षेत्रीय अपर संचालक, उच्चशिक्षा दुर्ग संभाग, दुर्ग ने भारत में अंग्रेजों के विरूद्ध संघर्ष यात्रा जनजातियों द्वारा प्रारंभ किए जाने की जानकारी दी। उन्होंने अंग्रेजों के विरूद्ध संघर्ष में गोविन्द गुरू, सिद्धान्तों, बुद्ध, भरत एवं मांझी की भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि जनजाति समाज अपने इष्ट आराधना में ईश्वर से कुछ माँगते नही है, बल्कि वे प्रकृति को देते है, इसलिए ऐसे जनजातियों एवं उनकी सामाजिक, ऐतिहासिक एवं आध्यात्मिक संरचनाओं को जानने एवं समझने का प्रयास अवश्य करना चाहिए। हम वर्तमान में जनजातियों को असभ्य समुदाय के लोग समझते है, किंतु यदि हम इनकी जीवन यात्रा को गूढ़ता से देखें तो ये हमसे अधिक सभ्य है। हमें जनजातियों को देखने का दृष्टिकोण बदलना होगा ताकि हम सब मिलकर प्रकृति का संरक्षण कर सकें।

कार्यक्रम में महाविद्यालय के सभी प्राध्यापकगण एवं कर्मचारीगणों के साथ ही बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहें। साथ ही नवीन संगीत महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. ऋचा ठाकुर तथा

वनवासी विकास समिति के विभिन्न सदस्य भी उपस्थित रहें। कार्यशाला के अंत में डॉ. दिव्या मिंज ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ किया गया।

विश्व पर्यटन दिवस पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का सफल आयोजन

नवीन शासकीय संगीत महाविद्यालय दुर्ग में विश्व पर्यटन दिवस के उपलक्ष्य में एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्राचार्य डॉ . एम ए सिद्दकी और प्रभारी प्राचार्य डॉ. के.पद्मावती मैडम के कुशल मार्गदर्शन में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन से हुई, जिसके बाद सांस्कृतिक प्रस्तुतियों, ''कविता पाठ और चित्रकला प्रतियोगिता जैसी गतिविधियों में सुरेश, अंशुमान, राहुल, सुभाष, आयुषी, रागिनी, सौरभ, विवेक, रूही, सीमा सहित अन्य कई विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। चित्रकला प्रतियोगिता में सुमन जोशी ने प्रथम स्थान और डॉली देवांगन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। वहीं, कविता पाठ में दीपिका की छत्तीसगढ़ी लोकगीत 'ददरिया' की प्रस्तुति से सबका मन मोह लिया। इसके अलावा,बीपीए प्रथम वर्ष की छात्रा राजेश्वरी साहू और बीपीए द्वितीय वर्ष के छात्र श्री तपन नाथ सर जी एवं ऋषभ ने पर्यटन और हिंदी दिवस पर प्रेरणादायक कविताएँ प्रस्तुत कीं, कार्यक्रम में बीपीए द्वितीय वर्ष के छात्र एवं भिलाई इस्पात संयंत्र से सेवानिवृत्ता अधिकारी श्री जगदीश बामनिया सर,श्री तपन नाथ सर और श्री जीवनंदन सर ने भी हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में हिंदी भाषा की महत्ताा पर अपने विचार व्यक्त किए। श्री तपन नाथ जी द्वारा आयोजित प्रश्नोत्तारी प्रतियोगिता भी खास आकर्षण रही, जिसमें पर्यटन और सामान्य ज्ञान से जुड़े प्रश्न पूछे गए। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार प्रदर्शन डॉ. निधि वर्मा द्वारा किया गया। इस अवसर पर सभी विद्यार्थी एवं समस्त शिक्षकगण श्री गजेंद्र यादव, डॉ संगीता चौबे, आयुशी गिरवाल तथा श्री यशवंत साहू उपस्थित रहे। प्रथम स्थान प्राप्त प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किया गया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रीय गीत से हुआ तथा विद्यार्थियों व शिक्षकों ने इसे एक महत्वपूर्ण आयोजन माना।

अर्थशास्त्र विभाग द्वारा विस्तार व्याख्यान का आयोजन

महाविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग द्वारा विस्तार व्याख्यान का आयोजन किया गया। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. ए.के. सिंह के मार्गदर्शन में आयोजित इस आमंत्रित व्याख्यान के मुख्य वक्ता श्री अविचल शर्मा, सहायक प्राध्यापक, डेटा साइंस विभाग, क्राइस्ट युनिवर्सिटी लवासा, पुणे महाराष्ट्र रहे। कार्यक्रम का प्रारंभ सरस्वती पूजन से किया गया। स्वागत भाषण अर्थशास्त्र विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. के. पद्मावती ने दिया। तत्पश्चात् श्री अविचल शर्मा ने 'हर अर्थव्यवस्था का ईंधनः मैक्रोइकॉनॉमिक्स और इसका विकास' विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने प्रो. एडम स्मिथ, प्रो. कीस, प्रो. कार्ल मार्क्स, फिजिक्स वक्र से होते हुए वर्तमान अर्थव्यवस्था पर इन सिद्धांतों का प्रयोग बताया। किस तरह उस दौर का 'ईंधन युग' वर्तमान में 'डेटा युग' में बदल गया है। वर्तमान

संदर्भ में अर्थशास्त्र के सिद्धांतों की उपयोगिता को बड़े ही व्यवहारिक व रोचक ढंग से प्रस्तुत दिया।

अर्थशास्त्र विभाग की अतिथि प्राध्यापक डॉ. जिज्ञासा पाण्डेय व छात्राओं ने कु. मनीषा बघेल व शिल्पी दुबे ने अतिथियों का स्वागत किया।

कार्यक्रम में इतिहास विभाग की वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. ज्योति धारकर, अर्थशास्त्र विभाग के अतिथि प्राध्यापक डॉ. जिज्ञासा पाण्डेय, डॉ. नीता मिश्रा, वाणिज्य विभाग के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. एच.पी. सिंह सलूजा, डॉ. प्रदीप जांगड़े, डॉ. लाली शर्मा, अतिथि प्राध्यापक डॉ. सोमनाथ ड़डसेना, कु. नूतन देशलहरा, कु. प्रिया अग्रवाल, डॉ. कुंदन जांगड़े, भोपालपट्टनम की अर्थशास्त्र विभाग की सहायक प्राध्यापक श्रीमती सुशीला गावड़े एवं विभिन्न विभागों के छात्र-छात्राएं उपस्थित रहें। कार्यक्रम का संचालन हर्ष नायर अध्यक्ष, अर्थशास्त्र परिषद एम.ए. तृतीय सेमेस्टर ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन कु. शिल्पी दुबे एम.ए. तृतीय सेमेस्टर ने किया।

सड़क-सुरक्षा पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा बजाज ऑटो के सहयोग से सड़क सुरक्षा पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य डा. एस. एन. झा ने विद्यार्थियों को संबोधित किया ।

डॉ. झा ने विद्यार्थियों को सड़क नियमों का पालन करने हेतु प्रेरित किया और वाहन चलाते समय हेलमेट पहनने की सलाह दी। साथ ही वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ जी.एस.ठाकुर ने विद्यार्थियों को सड़क पर चलते समय सावधानी बरतने एवं लापरवाही पूर्वक गाड़ी चलाने से बचने की सलाहदी। बजाज आटो की तरफ से कार्यक्रम संचालित कर रहे अमनदीप द्वारा विद्यार्थियोंको यातायात संबंधी खेल गतिविधियों से जोड़कर सड़क-सुरक्षा की जानकारी दी गई। स्टंट-मैनरेहान के द्वारास्टंट से होने वाले नुकसान से युवाओं को अवगत कराया गया और भविष्य में किसी भी प्रकार के स्टंट न करने हेतु अपील की गई। इस कार्यक्रम में राष्ट्रीय सेवा योजना के जिला संगठक डॉ जनेंद्र दीवान, कार्यक्रम अधिकारी प्रो. तरुण साहू, सहायक कार्यक्रम अधिकारी सुदेश साहू, डॉ रश्मिगौर, राखी भारती, शाहबाज, प्रियम, निखिल कुमार आदि प्राध्यापक उपस्थित थे । एन.एस.एस. के स्वयं सेवक मिनेश, द्रविड़, निमिश, दीपांकर, मो. आदिल कार्यक्रम में सक्रिय रूप से उपस्थित रहे।

महाविद्यालय में भारतीय भाषायें एवं उनकी एकात्मता पर कार्यशाला

भाषा संस्कृति की संचारक है, हम सभी को भाषा की अस्मिता का सम्मान करना चाहिए। आज का कार्यक्रम भाषा, उत्सव की तरह प्रतीत हो रहा है। ये विचार कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय, रायपुर के कुलाति प्रोफेसर बलदेव भाई शर्मा ने व्यक्त किये। श्री शर्मा महाविद्यालय के राधाकृष्णन हॉल में अपर संचालक, उच्चशिक्षा, दुर्ग संभाग द्वारा आयोजित भारतीय भाषायें एवं उनकी एकात्मता पर कार्यशाला में अध्यक्ष एवं मुख्य वक्ता के रूप में अपने विचार व्यक्त कर रहे थे। श्री शर्मा ने कहा कि भाषाओं के नाम पर किसी भी प्रकार का विभेद नही होना चाहिए। देश के किसी भी कोने के किसी भी भाषा को बोलने वाले हर व्यक्ति हमें गले लगाना चाहिए। तमिल के प्रसिद्ध कवि सुब्रमण्यम स्वामी ने पूरे देश को एकता के सूत्र में पिरोने का कार्य किया है। उनकी नजर में हर भाषा राष्ट्र भाषा है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि दुर्ग के संभाग आयुक्त एवं हेमचंद यादव विश्वविद्यालय, दुर्ग के कुलपति श्री सत्यनारायण राठौर ने अपने संबोधन में कहा कि प्रत्येक भारतीय भाषा समृद्ध है। कई भाषाओं के शब्दों में समानता है। समूचे विश्व को भारतीय भाषाओं के महत्व का एहसास है। अपना दीया खुद बनो, कहावत को चरित्रार्थ करने की सलाह देते हुए कुलपति श्री राठौर ने सभी भाषाओं का सम्मान करने का आग्रह किया।

महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. अजय कुमार सिंह ने अपने स्वागत भाषण में सभी उपस्थित अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए कहा कि प्रत्येक भाषा का अपना महत्व है, उसे यदि उचित रूप से उच्चारित किया जाये, तो उसका अलग आनंद है। हमको प्रत्येक भाषा एवं उस भाषा को बोलने वाले का सम्मान करना चाहिए। संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषायें हैं। डॉ. अजय सिंह ने भारतेन्दु हरिषचंद्र की कविता का भी उल्लेख किया। भाषा और संस्कृति की जितनी विविधता भारत में पायी जाती है, उतनी अन्य देशों में दुर्लभ है। भारतीय भाषायें प्रायः सहोदर भाषायें है। भारत की सभी भाषायें समाज को एकता के सूत्र में जोड़ने का कार्य करती है। हमें अपनी भाषायी विविधता पर गर्व होना चाहिए। कार्यक्रम के संयोजक अपर संचालक, उच्चशिक्षा दुर्ग संभाग डॉ. राजेश पाण्डेय ने विषय का प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुये कार्यशाला की प्रांसगिकता पर विस्तार से प्रकाश डाला। विभिन्न संस्मरणों के माध्यम से डॉ. पाण्डेय ने भाषायी, महत्व एवं उसके प्रभाव का विश्लेषण किया। डॉ. पाण्डेय ने कहा कि मातृभाषा में किया जाने वाला शोध कार्य अपेक्षाकृत अधिक आसान एवं प्रभावशाली होगा। केन्द्र सरकार द्वारा इंजीनियरिंग एवं मेडिकल की पढ़ाई भी हिन्दी भाषा में किये जाने संबंधी प्रयास आरंभ किये जा चुके है। डॉ. पाण्डेय ने कहा कि देश में प्रांतों की भाषा के आधार पर वर्गीकृत किये जाने का प्रयास सदैव किया जाता रहा हैं, परंतु हम सभी को मिलकर इसे विफल करना होगा। कार्यक्रम में प्रबुद्ध परिषद के प्रांत संयोजक श्री अतुल नागले विद्या भारती के श्री दीपक सोनी विभाग समन्वयक श्री राद्यवेन्द्र नाथ मिश्रा विभाग प्रमुख श्री दीपक यादव सह विभाग समन्वयक तथा श्री शत्रुध्न देवांगन जिला समन्वयक भी उपस्थित थे।

शासकीय नवीन संगीत महाविद्यालय, दुर्ग के अतिथि प्राध्यापक श्री गजेन्द्र यादव एवं छात्र-छात्राओं द्वारा प्रस्तुत सरस्वती वंदना एवं छत्तीसगढ़ के राज्य गीत की प्रस्तुति के साथ आरंभ हुये इस कार्यक्रम की संचालक इतिहास विभाग की डॉ. ज्योति धारकर ने भारतीय भाषायें एवं उनकी एकात्मता पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में अतिथियों का स्वागत अपर संचालक, उच्चशिक्षा डॉ. राजेश पाण्डेय एवं साईंस कालेज, दुर्ग के प्राचार्य डॉ. अजय सिंह तथा वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. एस.एन. झा ने किया।

कार्यक्रम के दौरान विभिन्न भाषाओं के प्राध्यापकों ने अपनी-अपनी भाषाओं में संक्षिप्त प्रस्तुति देते हुये भाषा का महत्व समझाया। इन प्रस्तुति देने वाले में संस्कृत में डॉ. जनेन्द्र दीवान, तमिल में डॉ. शीला विजय, कश्मीरी डोगरी में राहुल सिंह, पंजाबी में डॉ. मोनिका शर्मा, बंग्ला में डॉ. बिपाशा, भोजपुरी में डॉ. अम्बरीश त्रिपाठी, मैथिल में कुंदन कुमार यादव, तेलगू में डॉ. पी. वसंतकला, मराठी में श्रीमती नीलिमा सगदेव, सिंधी में डॉ. सीमा पंजवानी शामिल थे। कार्यशाला के दौरान सांस्कृतिक प्रस्तुतियां भी आयोजित हुई, जिनमें भिलाई नायर समाजम सेक्टर-8 के विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत छत्तीसगढ़ी नृत्य, खालसा कालेज मालवीय नगर, दुर्ग द्वारा प्रस्तुत पंजाबी शस्त्रों के चलाने की विद्या पर आधारित गटका, गुजराती गरबा तथा मलयाली संस्कृति से जुड़ी प्रस्तुति शामिल थी। कार्यक्रम के अंत में सभी अतिथियों को स्मृति चिन्ह भेंटकर सम्मानित किया गया। राष्ट्रगीत के गायन एवं महाविद्यालय के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. अभिनेष सुराना द्वारा दिए गए धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ। कार्यक्रम के दौरान दुर्ग जिले के समस्त महाविद्यालयों के प्राचार्य एवं बड़ी संख्या में प्राध्यापकगण उपस्थित थे।

महाविद्यालय के 11 प्राध्यापकों ने पदोन्नत होकर विभिन्न शासकीय महाविद्यालयों में प्राचार्य के रूप में पदभार ग्रहण किया

महाविद्यालय के विभिन्न विभागों में पदस्थ प्राध्यापकों ने छत्तीसगढ़ शासन उच्चशिक्षा विभाग द्वारा 04 नवम्बर 2024 को जारी आदेश के परिपालन में विभिन्न शासकीय महाविद्यालयों ।में प्राचार्य के पद पर कार्यभार ग्रहण किया । समूचा महाविद्यालय परिवार इन सभी पदोन्नत स्नातक प्राचार्यों को बधाई देते हुए इनके उज्जवल भविष्य की कामना करता है ।

डॉ. एम.ए. सिद्दीकी
प्राचार्य
शा. महाविद्यालय नगपुरा, दुर्ग

डॉ. अनुपमा आस्थाना
प्राचार्य
शा. नवीन महा. रिसाली, भिलाई

डॉ. शिखा अग्रवाल
प्राचार्य
शा. महा. जामगाँव-आर, दुर्ग

डॉ. कमर तलत
प्राचार्य
शा. महा. बोरी, दुर्ग

डॉ. सोमाली गुप्ता
प्राचार्य
शा. महा. अर्जुन्दा, बालोद

डॉ. सुचित्रा गुप्ता
प्राचार्य
शा. दिग्विजय महा. राजनांदगाँव

डॉ. आर. एस.सिंह
प्राचार्य
शा. महा. जामुल, भिलाई

डॉ. बलजीत कौर
प्राचार्य
शा. महा. खुर्सीपार, भिलाई

डॉ. रंजना श्रीवास्तव
प्राचार्य
शा. कन्या महा. दुर्ग

डॉ.अश्विनी महाजन
प्राचार्य
शा. पी.जी.महा. भिलाई-3, दुर्ग

डॉ. अनिल कश्यप
शास. आत्मानंद अंग्रेजी माध्यम मॉडल कॉलेज,सोमनी

महाविद्यालय में उच्चशिक्षा विभाग छत्तीसगढ़ शासन के निर्देशानुसार विभिन्न विभागों में प्रतिनियुक्ति पर कार्यरत सहायक प्राध्यापकों की प्रतिनियुक्ति समाप्त होने पर उनकी पदस्थापना शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, दुर्ग में हुई। महाविद्यालय परिवार में इनका स्वागत है।

डॉ. प्रशांत श्रीवास्तव हेमचंद यादव विश्वविद्यालय दुर्ग में अधिष्ठाता छात्र कल्याण के पद पर प्रतिनियुक्ति समाप्ति के पश्चात् सहायक प्राध्यापक भूगर्भशास्त्र के पद पर नियुक्त हुए।

डॉ. राकेश रंजन सिंह मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी, रायपुर छ.ग. कार्यालय में संयुक्त निर्वाचन पदाधिकारी पद पर प्रतिनियुक्ति समाप्ति के पश्चात् सहायक प्राध्यापक इतिहास के पद पर पदस्थापना

डॉ. सुमीत अग्रवाल हेमचंद यादव विश्वविद्यालय, दुर्ग में सहायक कुलसचिव के पद पर प्रतिनियुक्ति समाप्ति के पश्चात् सहायक प्राध्यापक वाणिज्य के पद पर पदस्थापना

प्राचार्य, शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय दुर्ग (छ.ग.) द्वारा प्रकाशित तथा विकल्प विमर्श, रायपुर द्वारा मुद्रित। (केवल आंतरिक वितरण हेतु)
फोन- 0788 2211688 ई मेल:pprinci2010@gmail.com वेबसाइट www.govtsciencecollegedurg.ac.in